# कमल संदेश
ikf{kd if=dk

**संपादक**

**प्रभात झा, सांसद**

**कार्यकारी संपादक**

**डॉ. शिव शक्ति बक्सी**

**सहायक संपादक**

**संजीव कुमार सिन्हा**

**संपादक मंडल सदस्य**

**सत्यपाल**

**कला संपादक**

**धर्मेन्द्र कौशल**
**विकास सैनी**

**सदस्यता शुल्क**

वार्षिक : **100/-**
त्रि वार्षिक : **250/-**

**संपर्क**

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDI : +91(11) 23387887
**पता** : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

**ई–मेल**
kamalsandesh@yahoo.co.in

**प्रकाशक एवं मुद्रक** : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा


# विषय-सूची


## विशाल चुनावी जन-सभाएं

छत्तीसगढ़........ 7
असम........ 8
बिहार........ 9
उत्तर प्रदेश........ 10
मध्य प्रदेश........ 11
तमिलनाडु........ 12
झारखंड........ 13
कर्नाटक........ 14
राजस्थान........ 15
छत्तीसगढ़........ 16
ओडिशा........ 17
महाराष्ट्र........ 18
मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र........ 19

## लेख

कथा कठपुतली प्रधानमंत्री की
– **वेदप्रताप वैदिक**........ 20
देश को जरूरत है नई आर्थिक सोच की
– **तवलीन सिंह**........ 22
टीम इंडिया के कैप्टन हैं नरेन्द्र मोदी
– **कंचन गुप्ता**........ 23
मोदी ने जगाया आत्मविश्वास
– **राजनाथ सिंह सूर्य**........ 25


## शुभकामनाएं!

**कमल संदेश के सुधी पाठकों को अक्षय तृतीया की हार्दिक शुभकामनाएं**

**बोध कथा**

# उस एक घटना ने बदल दिया विवेकानंद का जीवन

बात उन दिनों की है जब स्वामी विवेकानंद नए-नए संन्यासी बने थे। उस समय तक उन्होंने प्राणिमात्र में समान भाव से ईश्वर के दर्शन के संदेश का गंभीरता से अध्ययन नहीं किया था। एक बार वह गांवों की स्थिति का अध्ययन करने तथा लोगों को सदाचारी बनने और दुर्व्यसनों से दूर रहने का उपदेश देने निकले।

भीषण गर्मी में स्वामी जी एक गांव से गुजर रहे थे। उन्हें प्यास लगी थी। खेत की मेड़ पर बैठे एक व्यक्ति को लोटे से पानी पीते देखकर उन्होंने कहा, भैया, मुझे भी थोड़ा पानी पिला दो। उस ग्रामीण ने भगवा वस्त्रधारी को देखकर सिर झुकाया और बोला, महाराज, मैं निम्न जाति का व्यक्ति आपको अपने हाथ से पानी पिलाकर पाप मोल नहीं ले सकता।

स्वामी जी यह सुनकर आगे बढ़ लिए। कुछ ही क्षणों में उन्हें लगा कि उन्होंने संन्यासी बनने के लिए जाति, परिवार और पुरानी प्रचलित गलत मान्यताओं का त्याग कर दिया, फिर आग्रह करके उस निश्छल ग्रामीण का पानी क्यों नहीं स्वीकार किया? उनका जाति अभिमान जाग उठा? यह तो अधर्म हो गया।

वह तुरंत किसान के पास लौटकर बोले, भैया, मुझे क्षमा करना। मैंने तुम जैसे निश्छल परिश्रमी व्यक्ति के हाथों से पानी न पीकर घोर पाप किया है। निम्न जाति तो उसकी होती है, जो दुर्व्यसनी और अपराधी होता है।

स्वामी जी ने उसके हाथ से पानी ग्रहण किया। बाद में वह खुलकर ऊंच-नीच की भावना पर प्रहार करते रहे।

**संकलन : शिवकुमार गोयल**

(अमर उजाला से साभार)


## घोषणा-पत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| समाचार–पत्र का नाम | | : | dey Ink |
| समाचार–पत्र की पंजीयन संख्या | | : | दिल्लीइन/2006/16953 |
| भाषा/भाषाएं, जिसमें/जिनमें समाचार–पत्र प्रकाशित किया जाता है | | : | हिन्दी |
| इसके प्रकाशन का नियमकाल तथा जिस दिन/दिनों/तिथियों को यह प्रकाशित होता है। | | : | पाक्षिक |
| समाचार–पत्र की फुटकर कीमत | | : | केवल 10 रूपए |
| प्रकाशक का | नाम | : | डा. नन्दकिशोर गर्ग |
| | राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| | पता | : | 11, अशोक रोड, नई दिल्ली–110001 |
| मुद्रक का | नाम | : | डा. नन्दकिशोर गर्ग |
| | राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| | पता | : | 11, अशोक रोड, नई दिल्ली–110001 |
| सम्पादक का | नाम | : | प्रभात झा |
| | राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| | पता | : | 11, अशोक रोड, नई दिल्ली–110001 |
| जिस स्थान पर मुद्रण का काम होता है, उसका सही तथा ठीक विवरण | | : | एक्सेल प्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 |
| प्रकाशन का स्थान | | : | डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रह्मण्यम भारती मार्ग नई दिल्ली–03 |


**व्यंग्य चित्र**

# प्रधानमंत्री पद की गरिमा, पीएमओ की विश्वसनीयता एवं संविधान की मर्यादा पुनर्स्थापित करने का समय

लोग अपने घरों से बाहर निकल रहे हैं और भारी संख्या में मतदान कर रहे हैं। एक ओर जहां यह लोकतंत्र की जीत है जबकि मतदाताओं की भागीदारी अप्रत्याशित रूप से चुनावों में बढ़ी है वहीं दूसरी ओर यह परिवर्तन के लिए जन-जन के मन में बसे छटपटाहट की ओर इशारा करता है। लोग अब परिवर्तन चाहते हैं, अब वे उस दुरूह स्थिति से निकलना चाहते हैं, जिसमें कांग्रेसनीत संप्रग सरकार ने उन्हें धकेल दिया था। शहरी व ग्रामीण, पुरूष एवं महिलाएं, नए मतदाता या बुजुर्ग, सभी अपने मताधिकार का प्रयोग कर रहे हैं, एक ऐसा अधिकार जिससे वे ऐसी सरकार चुन सके जो भारत को एक नई ऊंचाई पर पहुंचा सके। ''अबकी बार-मोदी सरकार'' और ''मोदी आने वाला है'' जैसे गीत लोगों के दिलों में बस चुके हैं। ''मैं देश नहीं झुकने दूंगा, मैं देश नहीं मिटने दूंगा'' के स्वर युवाओं में नई आत्मविश्वास एवं ऊर्जा पैदा कर रहे हैं जो इस चुनाव को भ्रष्टाचार, कुशासन एवं महंगाई के विरूद्ध एक युद्ध के रूप में देख रहे हैं। आशा एवं उमंग के इस वातावरण ने लोकतंत्र को मजबूत करते हुए करोड़ों दिलों में उम्मीद की नई किरणें जला दी है।

एक ओर जहां पूरा देश चुनावों में व्यस्त है, वही अभी हाल ही में दो नई पुस्तकें जो प्रकाशित हुई हैं, ने पूरे देश को झकझोर दिया है। जहां तक इन पुस्तकों का प्रश्न हैं, वे सवाल जो भाजपा नेता अब तक पूरी गंभीरता से उठाते थे परन्तु एक तबके में जिसे राजनैतिक आरोप समझा जाता था अब सत्य साबित हो रहे हैं। प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के मीडिया सलाहकार रहे संजय बारू द्वारा लिखित पुस्तक, ''द एक्सिडेंटल प्राइम मिनिस्टर : मेकिंग एण्ड अनमेकिंग ऑफ मनमोहन सिंह'' ने संप्रग-I सरकार में प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) के कार्यकलापों के बारे में चौंकाने वाले तथ्य उजागर किए हैं। अपने पीएमओ के दिनों के संस्मरण में संजय बारू ने सोनिया गांधी के द्वारा पीएमओ पर पूर्ण नियंत्रण का खुलासा किया है। सोनिया गांधी के कहने पर पीएमओ में नियुक्त पुलॉक चटर्जी हर दिन पीएमओ की गतिविधियों से उन्हें अवगत कराते थे एवं महत्त्वपूर्ण विषयों पर उनसे दिशानिर्देश लेते थे। संजय बारू का कहना कि सोनिया गांधी द्वारा 'सत्ता त्यागना' किसी उच्च आदर्शों से प्रेरित न होकर महज एक राजनैतिक दिखावा था, कांग्रेस के दोहरे चरित्र को दर्शाता है। यह एक खुली बात थी कि डा. मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री तो थे परन्तु बिना किसी अधिकार के, न तो वे कैबिनेट में मंत्री नियुक्त कर सकते थे न ही उनको विभागों का बंटवारा करने की छूट थी। सभी अधिकार एवं शक्तियां सोनिया गांधी की मुट्ठी में थी जो अपने चुने हुए 'कोटरी' एवं 'नेशनल एडवाइजरी काउंसिल' के माध्यम से एक गैर-संवैधानिक सत्ता केन्द्र बनी रही। असल में यह सभी 'रहस्योद्घाटन' में पहले से ही जगजाहिर रहे हैं।

पूर्व कोयला सचिव पीसी पारेख द्वारा लिखित ''क्रूसेडर और कांस्पीरेटर? कॉलगेट एण्ड अदर ट्रूथ्स'' मनमोहन सिंह के 'कमजोर प्रधानमंत्री' की छवि को स्थापित करता है जिसका अपने कैबिनेट पर कोई नियंत्रण नहीं था। पारेख जिसने कोयला सचिव के पद से त्यागपत्र दिया था वे लिखते हैं कि एक ऐसे सरकार में जिस पर उनकी कोई भी राजनैतिक पकड़ नहीं थी के मुखिया के रूप में मनमोहन सिंह की छवि को 2जी-कॉलगेट जैसे घोटालों से भारी नुकसान हुआ। ये दोनों संस्मरण इस बात को सत्यापित करती है कि जब गैर संवैधानिक सत्ता केन्द्र की गिरफ्त में सरकार रही, राष्ट्रीय हितों पर खतरा मंडराता रहा। ये रहस्योद्घाटन काफी गंभीर है क्योंकि यह उन लोगों के द्वारा किए गये हैं जो जिम्मेदार पदों पर थे तथा प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के विश्वासपात्र रहे हैं। ये संस्मरण पीएमओ के अंदर के वातावरण का वास्तविक चित्रण है।

प्रधानमंत्री पद को महज एक औपचारिकता बना देश का नियंत्रण गैर-संवैधानिक सत्ता केन्द्र के हाथों सौंप देने का खामियाजा आज देश भुगत रहा है। यह बात पहले से कही जाती रही है कि देश में 'दो-सत्ता केन्द्र' हैं जिसके कारण भ्रष्टाचार, घोटाले और लूट का राज देश पर थोप दिया गया। लेकिन इस धारणा में अब सुधार की आवश्यकता है- यह 'दो-सत्ता केन्द्र' के कारण नहीं बल्कि 'एक सत्ता केन्द्र' जो कि गैर संवैधानिक रहा है, के कारण हुआ। यह गैर संवैधानिक सत्ता की केन्द्र सोनिया गांधी रहीं। वास्तव में यदि देखा जाय तो डा. मनमोहन सिंह के पास न तो कोई अधिकार था न ही कोई शक्ति। सभी शक्तियां एवं अधिकार सोनिया गांधी की मुट्ठी में कैद रही जिसने प्रधानमंत्री पद को प्रभावहीन बना दिया। यह देश के साथ बहुत बड़ा धोखा था जिसके कारण आज लोग कांग्रेस नीत संप्रग सरकार को अलविदा कहने को बेचैन हैं।

समय आ गया है कि प्रधानमंत्री पद की गरिमा, पीएमओ की विश्वसनीयता एवं संविधान की मर्यादा को पुनर्स्थापित किया जाए। पिछले दशक से यह साबित हुआ है कि यदि संविधान की मर्यादा एवं संवैधानिक पदों की गरिमा को ठेस लगे तो जनता को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। गैर-संवैधानिक सत्ता केन्द्र के साथ-साथ कमजोर प्रधानमंत्री ने देश का बंटाधार कर दिया है। इस स्थिति को अब चलने नहीं दिया जा सकता। लोगों ने अपना मन बना लिया है। लोग इस गैर-संवैधानिक सत्ता केन्द्र को जड़ से उखाड़ कर फेंकने के लिए बड़ी संख्या में अपने घरों से बाहर निकल रहे हैं। पिछले छह चक्रों में लोगों ने भारी मतदान किया है। इस रफ्तार को बनाये रखना पड़ेगा। भाजपा कार्यकर्ताओं के कंधों पर भारी जिम्मेदारी है। हमें इस परिवर्तन को हर हाल में लाना है, हमें 'मोदी सरकार' के सपने को साकार करना है ताकि राष्ट्र को सुदृढ़ कर पुनर्निमाण एवं विकास के रास्ते पर लाया जा सके। लोग भाजपा और श्री नरेन्द्र मोदी को भारी समर्थन दे रहे हैं, हमें उनके आशा एवं उमंग को बनाए रखना पड़ेगा ताकि लोकतंत्र के इस उत्सव से ऐसी सरकार निकले जो शांति, समृद्धि एवं प्रगति की नई गाथा लिखने को कृतसंकल्प हो। ■

# कांग्रेस ने भारत का विभाजन किया : राजनाथ सिंह

## गुजरात में मुसलमानों की प्रति व्यक्ति आय सबसे अधिक : राजनाथ सिंह

बिहार के भागलपुर में 21 अप्रैल को एक जनसभा को संबोधित करते हुए भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि देश को सबसे पहले कांग्रेस ने बांटा है। भारत अगर विभाजित हुआ है तो कांग्रेस ने ही किया है। इसलिए देश की सबसे बड़ी सांप्रदायिक पार्टी कांग्रेस है।

श्री सिंह ने कहा कि 'आज विरोधी दल गुजरात का मामला उठाते हैं। गुजरात कोई जाकर देखे। वहां के मुसलमान भाइयों की प्रति व्यक्ति आमदनी जितनी है, उतनी किसी और राज्य में किसी मुसलमान भाई की आमदनी नहीं है। अल्पसंख्यक भाइयों के मन में दहशत पैदा कर यहां वोट बटोरने की राजनीति हो रही है। लेकिन वोट दहशत पैदा कर नहीं, स्नेह पैदा कर मांगी जानी चाहिए।'

श्री सिंह ने कहा, 'लेकिन पूरे देश के अल्पसंख्यक उन्हें वोट दे रहे हैं। शाहनवाज हुसैन को यहां दे रहे हैं, लखनऊ में भी दे रहे हैं और नरेंद्र मोदी को भी वोट दे रहे हैं।'

उन्होंने कहा, 'भारत के हर क्षेत्र में परिवर्तन की लहर है। क्योंकि कांग्रेस ने 55 वर्षों तक शासन कर देश को तबाह कर दिया है। यहां प्राकृतिक संसाधनों की कमी नहीं है, फिर भी भारत दुनिया के गरीब देशों में गिना जाता है।'

भाजपा अध्यक्ष ने कहा, 'इस देश में जितने घोटाले हुए हैं, उसका थोड़ा भी हिस्सा बिहार पर खर्च होता तो यहां का काफी भला हो गया होता।'

उन्होंने कहा, 'जवाहर लाल नेहरू भी कहते थे कि हम राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं और आज राहुल गांधी भी अपने प्रचार में देश बनाने की बात ही कर रहे हैं।

उन्होंने कहा, 'कांग्रेस को लालू यादव और जनता दल (यू) की भी सहानुभूति प्राप्त है। लोगों के मन में आक्रोश है। जब-जब कांग्रेस आई है, महंगाई बढ़ी है। अटल जी भी प्रधानमंत्री थे, आप उस समय के सुशासन से उदाहरण ले सकते हैं। महंगाई कांग्रेस की गलत नीतियों, नियोजन और भ्रष्टाचार के कारण बढ़ी है। भारत के इतिहास में इतना कभी भ्रष्टाचार नहीं हुआ। हमने लगातार संसद में विदेशों से कालाधन लाने की बात उठाई, लेकिन ये सरकार टस से मस नहीं हुई। हमारी सरकार बनते ही हम उन कालेधन को भारत लाएंगे और यहां की समस्याओं का निदान करेंगे।' ■

# विशाल चुनावी जन-सभाएं

**छत्तीसगढ़**

## देश विभाजनकारी राजनीति से ऊब चुका है : नरेन्द्र मोदी

भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार श्री नरेन्द्र मोदी ने 20 अप्रैल को छत्तीसगढ़ के सरगुजा, बिलासपुर और दुर्ग तथा महाराष्ट्र के जलगांव में समर्थकों की विशाल सभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस की विभाजनकारी राजनीति की निंदा की, जिसने देश को बर्बाद कर दिया है और दृढ़तापूर्वक कहा कि जनता वोट के जरिये उसे सत्ता से उखाड़ फेंकने और एक स्थिर और मजबूत नयी सरकार लाने को तैयार है।

कांग्रेस के झूठे वादों से जनता किस कदर परेशान है, इसका जिक्र करते हुए श्री मोदी ने कहा कि यही सबसे अहम वजह है कि विभिन्न राज्यों में जनता कांग्रेस को सत्ता से बाहर कर रही है और कई मामलों में यह दो कार्यकाल से ज्यादा समय तक बाहर है।

महाराष्ट्र के जलगांव में एक रैली को संबोधित करते हुए श्री मोदी ने कांग्रेस-एनसीपी द्वारा किसानों के प्रति भेदभाव को उजागर किया। उन्होंने कहा केंद्रीय कृषि मंत्री महाराष्ट्र से होने के बावजूद राज्य में किसानों की स्थिति बेहद खराब है। उन्होंने महाराष्ट्र की जनता से गठबंधन के सभी उम्मीदवारों को चुनने की अपील की ताकि दिल्ली में एक मजबूत केंद्र सरकार बन सके। उन्होंने कहा कि गठबंधन के अलावा किसी और दल का राज्य में खाता भी नहीं खुलना चाहिए।

श्री मोदी ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के हाल में अमेठी में दिये गये उस बयान की भी निंदा की, जिसमें उन्होंने अमेठी की जनता से उनके बेटे का ख्याल रखने की बात कही थी क्योंकि उसने देश का ख्याल रखा है। श्री मोदी ने सवाल करते हुए कहा कि यदि 'बेटा' अमेठी का ख्याल रखने में ही अक्षम है तो वह पूरे देश का ख्याल कैसे रख सकता है। श्री मोदी ने कहा, ''मैडम कल अमेठी गयीं थीं और उनका भाषण चौंकाने वाला था। उन्होंने लोगों से कहा कि इंदिराजी ने आपको अपना बेटा दिया था, मैं अपना बेटा दे रही हूं। उन्होंने अमेठी की जनता से उनके बेटे का ख्याल रखने का आग्रह किया और कहा कि उनका बेटा देश का ख्याल रखेगा। एक बेटा जो अमेठी को नहीं संभाल सकता वह पूरे देश को कैसे संभाल पायेगा।''

श्री मोदी ने बताया कि किस तरह महिलाओं के खिलाफ देशभर में घन्य अपराध हो रहे हैं। उन्होंने कांग्रेस के झूठे वादों का खुलासा भी किया और बताया कि उन्होंने महिलाओं के

कल्याण के लिए धन आवंटित किया लेकिन उसे कभी इस्तेमाल नहीं किया। उन्होंने हाल में केंद्र सरकार द्वारा जारी आंकड़ों का जिक्र भी किया और कहा कि महिलाओं के खिलाफ सर्वाधिक अपराध वाले 10 राज्यों में से 7 कांग्रेस शासित हैं जबकि 3 कांग्रेस के सहयोगी दलों द्वारा शासित हैं।

उन्होंने कांग्रेस सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार का जिक्र करते हुए बताया कि उन्होंने विभिन्न घोटालों के जरिये किस तरह देश को लूटा है। श्री मोदी ने कहा कि किस तरह राष्ट्र की कीमत पर 'एक परिवार' ने अपने सदस्यों को लाभ पहुंचाया है। श्री मोदी ने कहा, ''इस तरह के लोगों के कर्ता-धर्ता होने पर हम देश को नहीं बचा सकते।'' श्री मोदी ने कांग्रेस

के घोषणापत्र को 'धोखा पत्र' करार दिया जिसमें पार्टी द्वारा पिछले कार्यकाल में किये गये वादों को ही दोहराया गया है, भले ही ये रोजगार देने के संबंध में हों या फिर महंगाई पर काबू पाने के संबंध में। श्री मोदी ने कहा कि किस तरह देश के प्रधानमंत्री की भी उनके कार्यालय में नहीं सुनी गयी जबकि राष्ट्रीय महत्त्व के सभी मामलों में अंतिम फैसला कांग्रेस अध्यक्ष का होता था। श्री मोदी ने कहा कि हाल में जारी किताब 'द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर' में साफ तौर पर यह लिखा हुआ है।

प्रधानमंत्री कार्यालय की निष्प्रभावी कार्यप्रणाली का जिक्र करते हुए श्री मोदी ने कहा, ''पहलीबार प्रधानमंत्री को एक संवाददाता सम्मेलन के जरिये यह कहना पड़ा है कि वह 10 साल में 1100 बार बोले हैं। अद्‌भुत! प्रधानमंत्री का ''प्रदर्शन'' ऐसा है कि वह दस साल में 1100 बार बोले हैं... क्या आप मुझे बता सकते हैं कि देश को कौन बचा सकता है।''

बिलासपुर में श्री मोदी ने कहा कि किस तरह केंद्र सरकार ने इस क्षेत्र में भाजपा नेताओं की पहल में अड़ंगा डाला है क्योंकि उन्हें राज्य के विकास की परवाह नहीं थी। श्री मोदी ने छत्तीसगढ़ के गठन के लिए श्री अटल बिहारी वाजपेयी की पहल को याद किया और बताया कि किस तरह डॉ. रमन सिंह विकास के सफर में राज्य को आगे ले गये हैं।

श्री मोदी ने कहा कि 2014 के चुनाव में राष्ट्र उनको सजा देना चाहता है जिन्होंने देश को बर्बाद किया है और ऐसी सरकार चुनना चाहता है जो देश को आगे बढ़ायेगी। श्री मोदी ने कहा, ''देश विभाजनकारी राजनीति से ऊब चुका है, यह विकास चाहता है, यह ऐसी राजनीति चाहता है जो एकता के सूत्र में बांध सके।'' ■

**असम**

## 'कांग्रेस को सबक सिखाएं'

केंद्र सरकार और असम की कांग्रेस सरकार पर कुशासन और व्यक्तिगत फायदे के लिए झूठ बोलने व राष्ट्र को गुमराह करने का आरोप लगाते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने मतदाताओं से इनको सबक सिखाने की अपील की। आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर श्री मोदी ने असम के बारपेटा, मंगलडोई और नौगांव में शनिवार 19 अप्रैल की दोपहर विशाल जनसभा को संबोधित किया। कांग्रेस की बांटने वाली राजनीति का विरोध करते हुए श्री मोदी ने लोगों से एक ऐसी सरकार चुनने के लिए कहा जो राज्य और केंद्र के विकास के लिए कार्य करे।

लगभग एक दशक से राज कर रही कांग्रेस पर निशाना साधते हुए श्री मोदी ने कहा कि असम का विकास इसलिए नहीं हो पा रहा है क्योंकि केंद्र में मां-बेटा और राज्य में बाप-बेटा की जोड़ी ने लोगों के साथ धोखा किया है। कांग्रेस के झूठ का पर्दाफाश करते हुए श्री मोदी ने बताया कि कैसे कांग्रेस उपाध्यक्ष मनरेगा के जरिए रोजगार देने का भ्रम फैला रहे हैं। मनरेगा के तहत करोड़ों लोग रोजगार के लिए आवेदन करते हैं लेकिन कुछ हजार लोगों को ही रोजगार नसीब होता है। यहां तक कि असम में भी लाखों लोगों ने मनरेगा के तहत रोजगार चाहा लेकिन चंद हजार लोगों को ही काम मिल सका।

कांग्रेस के लोगों की सुरक्षा खासकर महिलाओं के मसले पर लापरवाह रवैये की भी श्री मोदी ने कड़े शब्दों में निंदा की। उन्होंने कहा कि उत्तर- पूर्व राज्यों की लड़कियों के साथ दिल्ली में दुर्व्यवहार होता है। वह राज्य और दिल्ली में बड़ी वारदातों का शिकार हो रही हैं। हाल ही में जारी हुए आंकड़ों का जिक्र भी श्री मोदी ने किया। जिसके अनुसार महिलाओं के साथ होने वाले अपराध के मामले में असम फेहरिस्त में सबसे ऊपर शामिल तीन (टॉप थ्री) राज्यों में शुमार है।

श्री मोदी ने यह भी बताया कि कैसे महिला सुरक्षा के नाम पर बने एक हजार करोड़ रुपये के निर्भया फंड में से अब तक कांग्रेस ने एक रुपया भी खर्च नहीं किया है।

विभाजनकारी और विनाशकारी राजनीति करने का आरोप लगाते हुए श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस के तेलंगाना और सीमांध्र के विभाजन को लेकर चले संघर्ष में लोगों को दुख और तकलीफ के सिवाय कुछ नहीं मिला। इसी तरह के असम सरकार के प्रयास का जिक्र करते हुए श्री मोदी ने कहा कि बोडो व गैर बोडो

वर्गों में भी संघर्ष की वजह राज्य सरकार का ऐसा ही रवैया रहा। जबकि उसे सभी वर्गों को साथ लेकर चलना चाहिए था।

श्री मोदी ने बताया कि असम के मुख्यमंत्री एक टेलीविजन चैनल के खुलासे को आधार बना झूठी खबरें फैला रहे हैं कि गुजरात में मूलभूत सुविधाएं भी नही हैं। हाल ही में न्यूज टाइम असम ने गुजरात आकर सीएम के दावों की पड़ताल की और लोगों को सच बताया।

अन्य देशों से सटी सीमाओं से हो रही घुसपैठ, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और युवाओं के लिए शिक्षा और स्किल डेवलेपमेंट पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता जैसे महत्वपूर्ण मसलों का भी श्री मोदी ने जिक्र किया।

श्री मोदी ने लोगों से बीजेपी को समर्थन देकर जीत का मार्ग प्रशस्त करने की अपील की। साथ ही भरोसा दिलाया कि वह विकास और सुशासन के जरिए लोगों को प्यार देंगे। श्री मोदी ने इस मौके पर रोंगली बिहू की शुभकामनाएं भी दीं। ■

## बिहार

# 'इस बार केन्द्र में मजबूत सरकार बनाएं'

**श्री** नरेन्द्र मोदी ने 19 अप्रैल की शाम को बिहार के कटिहार और सुपौल में रैलियां संबोधित कीं और कांग्रेस के कुशासन को खत्म करने का आह्वान किया। श्री मोदी ने देश के संपूर्ण विकास के लिए अपना विजन सामने रखा और

दृढ़तापूर्वक कहा कि भाजपा के अधीन गांवों और शहरों के विकास पर बराबर जोर दिया जायेगा।

रैली को संबोधित करते हुए श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस का सफाया निश्चित है और 'मां-बेटे' के कुशासन का अंत आसन्न है। श्री मोदी ने कहा, ''जिस तरह भारत ने मतदान किया है, मैं कह सकता हूं कि मां-बेटा सरकार की हार निश्चित है। अब हमें मजबूत सरकार की उम्मीद करनी चाहिए।''

उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार कांग्रेस में निहित है और कांग्रेस के आरएसवीपी (राहुल, सोनिया, वाड्रा, प्रियंका) मॉडल ने देश की कीमत पर अपनी जेबें भरी हैं। श्री मोदी ने कहा, ''बड़े कार्यक्रमों में आरएसवीपी होता है। भारत की राजनीति में भी आरएसवीपी है और एक मीडिया संगठन ने उनकी गतिविधियों को प्रकाशित किया है। राहुल, सोनिया, वाड्रा और प्रियंका... यही आरएसवीपी मॉडल है। राहुल जी, आप गुजरात मॉडल की चर्चा करते हैं लेकिन देश इस मॉडल के बारे में जानना चाहता है।'' श्री मोदी ने कहा कि हाल में जारी हुई पुस्तक 'एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर' प्रधानमंत्री कार्यालय में कायम अनाधिकृत पदानुक्रम के बारे में खुलासा करती है जहां पीएम के विचार पीछे छूट जाते हैं और कांग्रेस अध्यक्ष अंतिम तौर पर मंजूरी देती हैं।

श्री मोदी ने राज्यों में फर्जी गठबंधनों की आलोचना भी जिनका गठन सिर्फ भाजपा को हराने के लिए किया गया है। श्री मोदी ने कहा, ''धीरे-धीरे हम समझ रहे हैं कि बिहार में परदे के पीछे क्या हो रहा है। कुछ खुलकर गठबंधन में शामिल हैं जबकि कुछ छुपकर। ये पार्टियां खुलकर क्यों नहीं कहतीं कि उन्होंने भाजपा को हराने के लिए गठबंधन किया है। परदे के पीछे उम्मीदवार वापस लिये जा रहे हैं।''

श्री मोदी ने देश के चहुंमुखी विकास के महत्त्व पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि देश के प्रत्येक राज्य को विकसित करने के भाजपा के फोकस का जिक्र भी किया भले ही ये राज्य पश्चिम के हों या पूरब के। असम के विकास के लिए भाजपा की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए श्री मोदी ने कहा, ''भारत तभी मजबूत बनेगा जब हमारे गांव मजबूत किये जाएं। यदि एक राज्य प्रगति करता है और अन्य पिछड़ जाते हैं तो यह उचित नहीं है।'' उन्होंने युवाओं के लिए रोजगार सुनिश्चित करने के लिए भाजपा के फोकस का उल्लेख भी किया।

श्री मोदी ने लोगों को कांग्रेस के आरएसवीपी मॉडल

से छुटकारा पाने का आग्रह किया जिसने देश को बरबाद कर दिया है। उन्होंने लोगों से सुशासन और विकास के लिए भाजपा का समर्थन देने का आग्रह भी किया। उन्होंने भारी संख्या में रैली में पहुंचे लोगों, खासकर महिलाओं को धन्यवाद दिया, जो भाजपा के पक्ष में अपना समर्थन जताने के लिए उपस्थित हुए हैं। ■

**उत्तर प्रदेश**

## 'सरकार में परिवर्तन से लोगों के जीवन में बदलाव आएगा'

गत 18 अप्रैल को, श्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के इटावा और कानपुर में बड़े पैमाने पर रैलियों को संबोधित किया और कहा कि राज्य में समाजवादी पार्टी और केंद्र में कांग्रेस के कुशासन से उत्तर प्रदेश को मुक्त करने का समय आ गया है।

समाजवादी पार्टी के प्रमुख श्री मुलायम सिंह यादव पर निशाना साधते हुए श्री मोदी ने कहा कि 'नेताजी' आवश्यकता पड़ने पर सही निर्णय लेने में असमर्थ हैं। उन्होंने कहा कि कठिन होने की आवश्यकता होती है तब सपा प्रमुख 'मुलायम' हो जाते हैं, और इसी तरह इसके ठीक उलट भी सही है, और हाल के दंगों के दौरान 'नेताजी' उन लोगों के परिजनों को सांत्वना में बुरी तरह विफल रहे थे जिनकी जान चली गई थी।

सपा और बसपा की गलत प्राथमिकताओं का एक उदाहरण देते हुए श्री मोदी ने कहा, ''कुछ हाथी पार्क के निर्माण में व्यस्त हैं और कुछ शेर सफारी पर, अफसोस की बात यह है कि उत्तर प्रदेश के लोगों के बारे में चिंता करने वाला कोई नहीं है।'' उन्होंने याद किया कि कैसे उत्तर प्रदेश ने गुजरात से शेरों को लेने के बारे में पूछा था, और कहा कि उन्हें गिर से गायों देने में अधिक खुशी होती क्योंकि इससे उत्तर प्रदेश के पीड़ित मवेशी-पालकों का फायदा हो सकता है।

राज्य सरकार के कुशासन पर आगे बात करते हुए श्री मोदी ने कहा कि एक ओर राज्य में गन्ना किसानों को उनकी उपज के लिए अपर्याप्त भुगतान पर वो व्यथित रहते हैं और दूसरी ओर कैसे गरीब लोगों को भी उनकी सुरक्षा के लिए बंदूकें लेकर चलना पडता है।" क्यों उत्तर प्रदेश में लोग भूखे हैं लेकिन वे बंदूकें खरीदने के लिए पैसा खर्च कर रहे हैं? यहाँ लोग सुरक्षित क्यों नहीं हैं? कानून और व्यवस्था बनाए रखा जाना चाहिए," श्री मोदी ने कहा और राज्य में बढ़ती अपराध दर से निपटने की जरूरत पर बल दिया।

श्री मोदी ने भी कांग्रेस की गरीब के साथ सहानुभूति जताने में असमर्थता के लिए आलोचना करते हुए कहा कि उनके लिए 'गरीबी' और 'गरीबों के घर' पर्यटन का एक स्रोत हैं और लोगों का ध्यान खींचने का एक और प्रयास है। श्री मोदी ने एक चाय विक्रेता के रूप में अपने बचपन के दिनों को याद किया और कहा कि वह गरीबी में जीने के मतलब को बहुत अच्छी तरह से समझते हैं। उन्होंने आश्वासन दिया कि भारतीय जनता पार्टी की जीत के बाद समाज के गरीब और कमजोर वर्गों के लिए काम करना इसके लिए एक प्रमुख चिंता का विषय होगा।

एक मांस निर्यात कंपनी में डाले गए आईटी छापे को उजागर करने वाली हाल की मीडिया रिपोर्टों का हवाला देते हुए श्री मोदी ने कहा कि कैसे, रिपोर्टों के अनुसार, 4 केन्द्रीय सरकार के मंत्रियों और 10 जनपथ के करीबी एक नेता की भागीदारी से चल रहे एक बड़े हवाला रैकेट का मामला इस छापे से खुला है।

श्री मोदी ने कहा कि चुनावों में जनता द्वारा मतदान की

भारी संख्या को देखकर ही कांग्रेस के सफाए का अंदाजा हो जाता है। उन्होंने कहा कि देश ने पिछले 60 साल में काफी बर्बादी देख ली है, और आने वाले पीढ़ी के लिए अब इसे और सहन करने के लिए तैयार नहीं है। उन्होंने कहा कि मतदान ने स्पष्ट रूप से स्थापित कर दिया है कि यूपीए अब इतिहास बनने जा रही है। मैं भारत भर में लोगों के मूड को देखा है। यदि आप एक बेहतर जीवन चाहते हैं तो पहले फिर दिल्ली में और फिर लखनऊ में सरकार बदल दें। उन्होंने लोगों से दिल्ली में अधिकतम कमल भेजने का आग्रह किया और आश्वासन दिया कि भाजपा केन्द्र में एक मजबूत और प्रभावी सरकार बनाएगी।

पार्टी के वरिष्ठ नेता डॉ. मुरली मनोहर जोशी कानपुर में रैली के दौरान उपस्थिति थे। ■

## मध्य प्रदेश

# 'कांग्रेस के कुशासन को खत्म करेंगे'

गत 16 अप्रैल को, मध्य प्रदेश के रतलाम और कुक्षी, धार में रैलियों को संबोधित करते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने लोगों से कांग्रेस के कुशासन को समाप्त करने और भाजपा का समर्थन करने की अपील की, जिनकी सरकार ने सफलतापूर्वक मध्य प्रदेश को 'बीमारू राज्य' के टैग से से बाहर निकाला है और इसे एक प्रगतिशील अर्थव्यवस्था में विकसित किया है।

श्री मोदी ने बताया कि कैसे श्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने जनकेंद्रित प्रयासों के साथ मध्य प्रदेश को 'बीमारू राज्य' बनने से रोका तथा इसे एक विकासशील अर्थव्यवस्था में तब्दील किया। उन्होंने आश्वासन दिया कि यदि शिवराजजी ने मध्य प्रदेश के लिए ऐसा किया है तो भाजपा राष्ट्र के लिए वही कर सकती है।

श्री मोदी ने कहा कि गुजरात, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों में भाजपा को फिर से निर्वाचित करने से यह स्पष्ट हो गया है कि लोगों की पसंद क्या है। उन्होंने कहा कि क्या कारण है कि छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और गुजरात के लोग बार-बार भाजपा को चुन रहे हैं? यहां लोगों ने भाजपा को देखा है, और उन्होंने अच्छी तरह से भाजपा को समझ लिया और अपनी समस्याओं को हल करने के लिए वे भाजपा पर भरोसा करते हैं। लोग जानते हैं कि भाजपा का एकमात्र उद्देश्य लोगों के विकास के लिए काम करना है। आगे कहा कि मध्य प्रदेश ने 2003 में बन्ध्या राजनीति को समाप्त किया था, और अब यह दिल्ली में भी ऐसा ही करने का समय आ गया है।

राष्ट्र में व्यापक रूप से फैले भ्रष्टाचार पर बोलते हुए श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने लंबे समय से पूरे तंत्र में भ्रष्टाचार फैला रखा है, और श्री राजीव गांधी के उस बयान का उदाहरण दिया जिसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि कैसे उनके शासन के दौरान भी केंद्र से निकले एक रुपए में से एक मात्र 15 पैसा ही गरीबों तक पहुंच पाता था। श्री मोदी ने कहा कि गरीब, दलितों और वंचितों का देश के संसाधनों पर पूरा अधिकार है , और आश्वासन दिया कि भाजपा यह सुनिश्चित करेगी कि इन संसाधनों का उपयोग उनके और साथ ही पूरे राष्ट्र के कल्याण के लिए किया जाए।

श्री मोदी ने आश्वासन दिया कि 2014 का चुनाव लोगों के लिए, और विशेष रूप से 18 से 28 साल के आयु वर्ग के युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए नींव का पत्थर है। युवाओं से नेतृत्व करने का आग्रह करते हुए श्री मोदी ने उनसे भाजपा को सत्ता में लाकर और देश के लिए प्रगति सुनिश्चित करके राष्ट्रहित के लिए जरूरी काम करने को कहा। ■

तमिलनाडु

## 'राष्ट्रीय विकास हेतु क्रांतिकारी दृष्टिकोण चाहिए'

गत 16 अप्रैल की शाम को श्री नरेन्द्र मोदी ने तमिलनाडु भर में विशाल रैलियों को संबोधित किया। श्री मोदी ने तमिलनाडु के कृष्णागिरि, सलेम में लोगों से बात की, और

लोगों से राज्य के समग्र विकास के लिए तमिलनाडु में भाजपा और उनके सहयोगी दलों का समर्थन करने का आग्रह किया, क्योंकि यह गठबंधन सबसे शक्तिशाली विकल्प के रूप में उभरा है जो 60 महीनों में तमिलनाडु के लिए उतना काम करेगा जो 60 साल में कांग्रेस ने नहीं किया है।

गुणवत्ता वर्धन, ब्रांडिंग और क्रेडिट लिंकेज को सुनिश्चित करके हस्तशिल्प और हथकरघा क्षेत्रों के विकास से लेकर नदियों को जोड़ने की और तमिलनाडु के किसानों को पर्याप्त पानी और बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित करने वाली प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना की शुरूआत करने तक, भाजपा घोषणापत्र के ध्यान के बारे में श्री मोदी ने बताया। इस तरह की कई पहलों को, जो भाजपा के अधीन शुरू की जाएंगी, श्री मोदी ने साझा किया और बताया कि इनसे तमिलनाडु अन्य राज्यों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय मोर्चे पर एक छाप बनाने में सक्षम हो सकता है।

कांग्रेस की विभाजनकारी और विनाशकारी राजनीति का उदाहरण देते हुए श्री मोदी ने बताया कि कैसे राष्ट्र उनके कृत्यों से थक गया है, और अब कुछ कार्रवाई चाहता है। विकास के लिए एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण का वादा करते हुए, श्री मोदी ने कहा कि भाजपा 'टीम इंडिया' के रूप में काम करेगी, जहाँ केन्द्र राज्यों के साथ मिलकर काम करेगा और राष्ट्र के विकास की कहानी को और सफल बनाएगी।

श्री मोदी ने सलेम के कौशल और सलेम के लोगों की ताकत की सराहना की और कहा कि कैसे केंद्र सरकार ने इस महत्वपूर्ण संसाधन का उपयोग करने के बारे में कभी भी नहीं सोचा है।

कृष्णागिरि में, श्री मोदी ने देश के विकास के लिए हमारे युवाओं को सशक्त बनाने के महत्त्व के बारे में बात की। उन्होंने यहाँ तक कहा कि उस सरकार का चुनाव करने की जरूरत है जो युवाओं के बारे में सोचती हो।

श्री मोदी ने कहा कि भले ही शहरीकरण और साक्षरता के आंकड़े सलेम में उच्च रहे हैं, लेकिन सफाई की सुविधा में यह काफी पीछे है, और कहा कि भाजपा ने कैसे स्वास्थ्य-सुरक्षा पर बल दिया और 'स्वच्छ भारत' को सुनिश्चित करने के लिए ठोस प्रयास करेगी। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि वर्ष 2022 तक, जब भारत अपनी स्वतंत्रता के 75वाँ वर्ष मनाएगा, सभी को बुनियादी सुविधाओं के साथ एक घर होगा।

केन्द्रीय सरकार के अधीन बनी अप्रभावी व्यापार नीतियों के बारे में बताते हुए श्री मोदी ने कहा कि कैसे भारत को, लौह अयस्क में समृद्ध होने के बावजूद विनिर्मित इस्पात का आयात करना पड़ता है। उन्होंने आश्वासन दिया कि भाजपा के अधीन भारत विश्व-स्तर के तरीकों और नवीनतम तकनीक अपनाकर एक विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित होगा।

उन्होंने लोगों से भाजपा का समर्थन करने और राष्ट्र के लिए जरूरी परिवर्तन लाने का आग्रह किया।

श्री मोदी की रैलियों में बहुत ही विशाल जनसमूह उमड़ पड़ा। कप्तान विजयकान्त, तमिलनाडु विधानसभा में विपक्ष के नेता और डीएमडीके के नेता सलेम में उपस्थित थे।■

झारखंड

## 'युवा भाजपा के साथ चलें'

**श्री** नरेन्द्र मोदी ने 15 अप्रैल को हजारीबाग, धनबाद और दुमका में विशाल रैलियां संबोधित कीं और लोगों से अपील की कि वे आगे बढ़कर केन्द्र की कमजोर और ढुलमुल सरकार को बाहर का रास्ता दिखाएं। उन्होंने देश में जरूरी परिवर्तन के लिए लोगों से भाजपा को वोट देने का अनुरोध किया।

श्री मोदी ने कहा कि 16 मई को चुनाव परिणामों की घोषणा के साथ ही कांग्रेस का सफाया हो जाएगा। कांग्रेस से जुड़े लोग भी अब उनकी हार की बात मानने लगे हैं। उन्होंने युवाओं से भाजपा को वोट देने की अपील की और केन्द्र में मजबूत और स्थिर सरकार का भरोसा दिलाया। श्री मोदी ने कहा कि ये चुनाव देश के युवाओं के भविष्य से जुड़े हैं। अगर ये अवसर चला गया तो फिर पांच साल तक इंतजार करना पड़ेगा।

संजय बारु की हाल ही में आई किताब ''द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर'' के बारे में बोलते हुए श्री मोदी ने कहा कि इस किताब में प्रधानमंत्री कार्यालय की कार्यशैली के बारे में पता चला है और उसके बाद उन्हें प्रधानमंत्री पर पूर्व में दिए गए वक्तव्यों को लेकर अफसोस है। देश ने जाना है कि इस बर्बादी के पीछे केवल एक ही परिवार जिम्मेदार है। श्री मोदी ने कहा कि मैंने अखबारों में पढ़ा कि प्रधानमंत्री का परिवार संजय बारु की किताब को लेकर नाराज है। उनकी बेटी कह रही हैं कि बारु ने धोखा दिया है। इसका मतलब यह है कि किताब में दिए गए तथ्य सही हैं। मैंने पूर्व में प्रधानमंत्री पर कुछ तीखी टिप्पणियां की थीं, लेकिन अब मुझे लगता है कि मुझे ऐसा नहीं बोलना चाहिए था क्योंकि देश की बर्बादी के पीछे बस एक ही परिवार है।

श्री मोदी ने कांग्रेस उपाध्यक्ष की अपरिपक्वता की आलोचना की और हाल ही में उनके भाषण में टॉफी की बात का उल्लेख करते हुए श्री मोदी ने दृढ़तापूर्वक कहा कि देश को अनुभव और जिम्मेदार नेतृत्व की जरूरत है। उन्होंने कहा कि श्री मोदी के लिए ट्रॉफियां ज्यादा मायने रखती हैं और साफ है कि पिछले एक दशक में गुजरात ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से अनेकानेक ट्रॉफियां और पुरस्कार जीते हैं।

श्री मोदी ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी के गांवों के सशक्तिकरण के सपने के बारे में बोलते हुए गांवों को सड़कों से जोड़ने वाली प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का उल्लेख किया और कहा कि भाजपा अब एक कदम आगे बढ़ते हुए प्रधानमंत्री सिंचाई योजना शुरू करेगी और सभी गांवों में पानी की पर्याप्त उपलब्धता भी सुनिश्चित करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा के घोषणा पत्र में कहा गया है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य में किसानों की इनपुट लागत पर 50 प्रतिशत लाभ भी जोड़ा जाएगा ताकि वे अपनी उपज उचित दामों पर बेच सकें।

श्री मोदी ने स्टेच्यू ऑफ यूनिटी प्रोजेक्ट में सहयोग के लिए झारखंड की जनता के प्रति आभार जताया। यह प्रोजेक्ट श्री नरेन्द्र मोदी ने सरदार वल्लभभाई पटेल के सम्मान में शुरू किया है।

श्री मोदी ने झारखंड में उनके पहले दौरे के बाद वहां बढ़े अपार जन-समर्थन के लिए भी आभार जताया। उन्होंने लोगों को जयंत सिन्हा को वोट देने और दिल्ली में एक मजबूत और स्थिर सरकार बनाने के लिए भाजपा का समर्थन करने की अपील की। उन्होंने कहा कि हमारे पास बीजेपी में अनेक लीडर हैं...हरेक नेता राष्ट्र निर्माण में समर्थ है और समर्पित है, चाहे वे यशवन्तजी हों, आडवाणीजी, सुषमाजी या जेटलीजी। आप जयंत को विजयी बनाकर मुझे दिल्ली में मजबूत सरकार बनाने में सहयोग दें। ■

कर्नाटक

## 'दिल्ली में एक मजबूत और स्थिर सरकार की जरूरत'

गत 13 अप्रैल की दोपहर को श्री नरेन्द्र मोदी ने कर्नाटक के चिक्कबल्लपुर, चिकमंगलूर और हावेरी में रैलियों को संबोधित किया, और भाजपा के तहत एक मजबूत और स्थिर सरकार में लाने का आश्वासन दिया। पिछले एक दशक में कांग्रेस के तहत चले कुशासन के बारे में बताते हुए श्री मोदी

ने इस बात पर बल देते हुए कि कैसे उनके अहंकार और भ्रष्टाचार ने राष्ट्र को बर्बाद कर दिया है, और उन्होंने 'भारत एक गरीब देश है' के अपने अपमानकारी बयान से भारत की वैश्विक छवि को तोड़ कर रख दिया है।

प्रधानमंत्री के बराक ओबामा को दिए गए बयान कि 'भारत गरीब देश है' और एक मंत्री के बयान कि 'भारत 5000 सालों से गरीब है' को याद करते हुए श्री मोदी ने उन उदाहरणों को सामने रखा जब कांग्रेस के मंत्रियों ने भारत एक गरीब और निर्भर देश के रूप में चित्रित किया है। उन्होंने इस तरह के रोते रहने की प्रवृत्ति पर सवाल उठाते हुए कहा कि भारत, अपनी समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों और उत्पादक मानव कौशल के साथ, कभी एक गरीब राष्ट्र नहीं था, यह तो कांग्रेस की सोच ही गरीब है।

केंद्र सरकार के कामकाज के तरीके को सामने रखते हुए श्री मोदी ने कहा कि कैसे जल्द ही जारी होने वाली एक पुस्तक 'एक्सीडेंटल प्राइम-मिनिस्टर' प्रधानमंत्री कार्यालय में अलोकतांत्रिक पदानुक्रम को उजागर करता है जहाँ हर फाइल और हर अनुमोदन माननीय प्रधानमंत्री की बजाय कांग्रेस अध्यक्ष से अनुमोदित होता है। उन्होंने कांग्रेस के एक मंत्री द्वारा दिए गए बयान का हवाला देते हुए कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री के रूप में अपना कार्यकाल जारी रखने के लिए बहुत उत्सुक नहीं थे पर श्रीमती सोनिया गांधी के उन्हें प्रधानमंत्री कार्यालय का प्रभार लेने के लिए मजबूर कर दिया था। श्री मोदी ने कहा कि कैसे इस अनधिकृत प्रणाली ने राष्ट्र को बर्बाद कर दिया है, इसका फायदा केवल कांग्रेस पार्टी को मिला है।

महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और कई अन्य समस्याओं के समाधान में केंद्र की विफलता की और उनके, इन चिंताओं के समाधान में उनकी असफलता को स्वीकार नहीं करने के, अहंकार की श्री मोदी ने निंदा की। उन्होंने बताया कि कैसे कांग्रेस ने धर्मनिरपेक्षता की आड़ में अपनी नाकामी को छुपाने का एक रास्ता तैयार किया है। कांग्रेस के अल्पसंख्यकों को लाभान्वित करने के 15 सूत्री कार्यक्रम पर वास्तविकता में कितना काम हुआ है इस पर सवाल उठाते हुए श्री मोदी ने कहा कांग्रेस की कई योजनाएं केवल कागजी कार्रवाई तक ही सीमित हैं, जिन पर कोई कार्यान्वयन कभी हुआ ही नहीं।

कॉफी की खेती में चिकमंगलूर की विशेषज्ञता के बारे में बताते हुए श्री मोदी ने कहा कि गुणवत्ता वर्धन के अलावा, प्रभावी पैकेजिंग और प्रौद्योगिकी उन्नयन के साथ इस क्षेत्र को बेहद विकसित किया जा सकता है लेकिन दुर्भाग्य से केंद्र ने इस दिशा में कोई भी ध्यान नहीं दिया है।

श्री मोदी ने भी कांग्रेस की सरकार के तहत देश की सीमाओं पर होने वाली सैनिकों की हत्याओं और गांवों में होने वाली किसानों की आत्महत्याओं के बारे में बोलते हुए कहा कि कांग्रेस सरकार के तहत श्री लाल बहादुर शास्त्रीजी का 'जय जवान, जय किसान' का के मंत्र बदलकर 'मर जवान, मर किसान' का नया मंत्र गढ़ा गया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की राजनीति लोगों को समस्याओं के बने रहने को सुनिश्चित करने के इर्द-गिर्द ही केंद्रित है।

श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस को डर है वे 16 मई को चुनाव परिणाम आने के बाद कहाँ जाएंगे, और इसलिए मोदी को किसी भी तरह से रोकने के लिए पूरी ताकत से लगी है और सारे भ्रष्ट तरीकों का सहारा ले रही है। भ्रामक दावे और विघटनकारी रणनीतियों के साथ, उनके विभिन्न गुटों के माध्यम से चाहे वो कांग्रेस की 'ए' टीम या 'बी' टीम हो, कांग्रेस का सारा ध्यान श्री मोदी को बदनाम करने और उन्हें प्रधानमंत्री बनने से रोकने पर है।

श्री देवेगौड़ा के, श्री मोदी के प्रधानमंत्री बनने पर कर्नाटक छोड़ने के योजना वाले बयान पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, श्री मोदी ने कहा कि अगर उन्होंने कर्नाटक छोड़ने का मन बना ही लिया है, तो उन्हें गुजरात जाना चाहिए जो उनका पूरे दिल से खुली बाहों के साथ स्वागत करेगा। श्री मोदी ने कहा कि वह अत्यंत सम्मान और देखभाल के साथ श्री देवेगौड़ा की सेवा करेंगे।

श्री मोदी ने 2014 के चुनाव राजनीतिक विश्लेषकों के अंकगणितीय गणना के बारे में नहीं है बल्कि 125 करोड़ भारतीयों के विचारों की समानता की 'कैमिस्ट्री' के बारे में है। उन्होंने लोगों से 2014 के चुनाव में कमल चुनाव चिह्न का समर्थन करने और केंद्र में एक मजबूत और स्थिर सरकार बनाने के लिए भाजपा को सक्षम करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि भाजपा की पहली प्राथमिकता सुशासन और विकास सुनिश्चित करने पर होगी, और भारतवासियों को केंद्र में रखकर बनाए गए भाजपा घोषणा पत्र के बारे में बताते हुए कहा कि ऐसी कई जनकेंद्रित योजनाओं के बीच किसानों के लिए बनी हितकारी नीति पर प्रकाश डाला जिसमें न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करते समय उपज पर लगी इनपुट लागत के 50 फीसदी जोड़ने की बात की गई है, जिससे उन्हें एक बेहतर जीवन सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी। श्री मोदी आगे आश्वासन देते हुए कहा कि भाजपा के तहत युवाओं के पास रोजगार होगा, गरीब का सशक्तिकरण होगा, किसानों और महिलाएँ एक सुरक्षित जीवन व्यतीत करेंगे और हर व्यक्ति को विकास करने का एक समान अवसर दिया जाएगा।

श्री मोदी ने कर्नाटक में रह रहे तमिलों को नए साल की बधाई दी जो 14 अप्रैल को नए साल के रूप में मनाते हैं। ■

## राजस्थान

# 'भाजपा रेगिस्तानी क्षेत्रों के विकास पर विशेष ध्यान देने के लिए प्रतिबद्ध'

गत 12 अप्रैल को श्री नरेन्द्र मोदी ने बाड़मेर, राजस्थान के पचपद्रा में एक विशाल रैली को संबोधित किया और भाजपा सरकार के अधीन रेगिस्तान भूमि के विकास की ओर विशेष ध्यान देने का आश्वासन दिया। श्री मोदी ने भाजपा के उस वायदापरक विजन को

लोगों के साथ साझा किया जिसमें राजस्थान के शुष्क भूमि पर विकासपरक गतिविधियों को प्रमुखता से बढ़ावा देकर उसे विकास के मोर्चे पर दूसरों राज्यों से आगे ले की बात की गई है।

भारतीय जनता पार्टी के सुशासन और विकास पर विशेष जोर पर देते हुए श्री मोदी ने आश्वासन दिया कि रेगिस्तान के राज्यों पर अलग से ध्यान दिया जाएगा। उन्होंने अपने मुख्यमंत्रित्व काल के तहत कच्छ में हुए बदलाव की चर्चा करते हुए कहा कि इस बदलाव ने इस क्षेत्र को बेहद विकसित होने का अवसर दिया है जिसके परिणाम आज देखे जा सकते हैं। आज कच्छ की रेगिस्तानी भूमि ने आज भरपूर फसलों की पैदावार करना शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा कि जब मैं मुख्यमंत्री बना तो गुजरात एक गंभीर भूकंप के प्रभाव की चपेट में था। लोग वहां से भाग रहे थे और स्थिति काफी खराब थी। लेकिन आज कच्छ को देखिए, यह भारत के सबसे तेजी से बढ़ने वाले जिलों में से एक है। हमने सीमा सुरक्षा बल के जवानों के लिए पानी उपलब्ध कराया है, और कच्छ ने कृषि के क्षेत्र में अपनी एक छाप छोड़ दी है और आज यह आम निर्यात कर रहा है। अगर कच्छ यह कर सकता है, तो बाड़मेर क्यों नहीं कर सकता है। उन्होंने श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी के नदियों को जोड़ने के सपने को सच करने के भाजपा के ध्यान पर बल देते हुए लोगों के लिए पर्याप्त पानी की पहुंच सुनिश्चित की जा सके।

राजस्थान के गैस और पेट्रोलियम भंडार की विशाल क्षमता के बारे में बताते हुए श्री मोदी ने कहा कि भाजपा के तहत, इस क्षेत्र

में और खोज की जाएगी और इससे मिलने वाले धन को लोगों की समृद्धि के लिए उपयोग में लाया जाएगा। इस क्षेत्र में जबरदस्त गुंजाइश का हवाला देते हुए श्री मोदी ने युवाओं से पेट्रोलियम उद्योग में कैरियर को आगे बढ़ाने का आग्रह किया और भाजपा सरकार के तहत अधिक से अधिक अवसर आने का इंतजार करने को कहा। श्री मोदी ने यह बताते हुए कि कैसे गुजरात ने सफलतापूर्वक अपनी सौर ऊर्जा की संभावनाओं का उपयोग किया था है वहीं राजस्थान में अशोक गहलोत सरकार केवल 'दामाद सत्ता' (रॉबर्ट वाड्रा से जुड़े सौर घोटाले की चर्चा करते हुए) में लिप्त था, जिसमें सौर पैनलों के लिए आरक्षित करोड़ों रुपए की भूमि को व्यक्तिगत लाभ के लिए 'दामाद' को प्रदान किया।

विदेशी बैंकों में जमा काले धन को वापस लाने का आश्वासन देते हुए श्री मोदी ने इस काम में कांग्रेस की अनिच्छा की बात की, और बताया कि कैसे उसके बैंक विवरण को छिपाने के मामले में पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कांग्रेस के श्री अमरिंदर सिंह के खिलाफ चुनाव आयोग में हाल में की गई शिकायत का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि एक सवाल पूछा गया था कि क्या उनके परिवार के जेनेवा में खाते हैं? अमरिंदर सिंह से इन सवालों के जवाबों की जरूरत है। यदि वह निर्दोष हैं तो कांग्रेस को उनके पक्ष में बोलना चाहिए और बताना चाहिए कि पूर्व मुख्यमंत्री और उनके परिवार इस मामले में साफ हैं। उन्होंने चुनाव आयोग से इस मामले में एक जांच करने का आग्रह किया है और आश्वासन दिया, ''चुनाव आयोग को यह शिकायत मिल गई है और मतदान से पहले लोगों को सच्चाई जानने का अधिकार है। यदि कांग्रेस राष्ट्र के सामने अपने स्वयं के मुख्यमंत्री के बारे में सच्चाई नहीं बता सकते हैं तो 16 मई के बाद बनने वाली सरकार लोगों के सामने सब कुछ रखेगी।''

श्री मोदी ने सीमाओं से अंदर घुस रहे शरणार्थियों के स्वागत में लगी कांग्रेस के पक्षपाती स्वभाव से अवगत कराते हुए बताया कि कांग्रेस के सारे फैसले केवल वोट बैंक की राजनीति के द्वारा ही निर्देशित होते हैं। उन्होंने कहा कि मुझे इस बात की पीड़ा है कि इस वोट बैंक की राजनीति ने हमारे देश को कमजोर कर दिया है और इसमें फूट पैदा कर दी है। हम इससे भारत को बचाने की जरूरत है। एक बांग्लादेशी भारत में आता है तो उसका आप स्वागत करते हैं और सभी नियमों को तोड़ देते हैं। लेकिन उनका क्या जो पाकिस्तान से भागकर आए हैं और भारत माता की जय का नारा लगा रहे हैं। वे किन्हीं गलत उद्देश्यों से पाकिस्तान से नहीं आए हैं, लेकिन वे भारत माता की जय बोल रहे हैं। मैं आश्वासन देता हूं कि हम उनका ख्याल रखेंगें।

श्री मोदी ने भ्रामक दावे और झूठे आरोपों के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी और श्री मोदी निंदा करने के कांग्रेस के प्रयासों की निंदा की, और कहा कि इन सबके बावजूद श्री मोदी का समर्थन करने वाले लोगों की संख्या कम नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के श्री मोदी को बदनाम करने के लिए बहुत से प्रतिष्ठित संस्थानों का दुरुपयोग किया है कि और उनके इन प्रयासों की वजह है उनका वह डर कि वे 16 मई के परिणाम घोषित होने के बाद जाएंगे कहाँ।

बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति का स्वागत करते हुए श्री मोदी ने कहा कि उनके आशीर्वाद से ही उन्हें नेतृत्व करने और राष्ट्र के लिए जरूरी परिवर्तन लाने की शक्ति दे दी है। उन्होंने लोगों से भाजपा के लिए वोट करने और कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों का सफाया करने की अपील की।■

**छत्तीसगढ़**

## 'कांग्रेस की विभाजनकारी और वंशवादी राजनीति को ध्वस्त करें'

गत 11 अप्रैल को श्री नरेन्द्र मोदी ने धमतरी, छत्तीसगढ़ में 'भारत विजय रैली' को संबोधित किया और लोगों से भाजपा के लिए वोट करने और देश की विकास यात्रा के लिए मार्ग प्रशस्त करने का आग्रह किया। कांग्रेस की विभाजनकारी और विनाशकारी कार्यों पर आगे बोलते हुए श्री

मोदी ने लोगों से वोट की शक्ति से उन्हें बाहर करने और भारत के भविष्य को सुरक्षित करने की अपील की।

राष्ट्र को लूटने की कांग्रेस की पुरानी प्रथा, अपने लोगों की संवेदनशीलता के प्रति कम से कम सम्मान की इस प्रणाली के बारे में श्री मोदी ने कहा कि इतने लंबे समय तक सत्ता में रहने और आजादी के प्रारंभिक वर्षों में लोगों के भारी समर्थन के बावजूद केंद्र सरकार कभी राष्ट्र के विकास की दिशा में काम करने के लिए परेशान नहीं हुई। इसके बजाय, उनका ध्यान राष्ट्र की संपत्ति को लूटकर अपनी जेब भरने तक ही केंद्रित था।

श्री मोदी ने महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गरीबी जैसी गंभीर समस्याओं पर सोचने से कांग्रेस के इनकार की बात करते हुए कांग्रेस पार्टी के गगनचुम्बी अहंकार को उनके इस कठोर रुख का जिम्मेदार ठहराया जिसके कारण वे अपनी कुटिल नीतियों और अनुचित कार्रवाई के लिए कोई जबाबदेही नहीं मानते हैं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र कांग्रेस के चरित्र में नहीं है। वे राजवंश की राजनीति पर जीवित है और उन्हें लगता है कि लोग उनकी जेब में हैं। कांग्रेस से कुछ भी उम्मीद नहीं की जा सकती है। आपको नहीं सोचना चाहिए कि वे आपके लिए कोई अच्छा काम करेंगे।" श्री मोदी ने कहा। उन्होंने, श्री अजीत जोगी की अतीत में हुई कई राजनीतिक पराजय के बावजूद श्री अजीत जोगी को ही चुनने के कांग्रेस के फैसले पर आश्चर्य व्यक्त किया। श्री मोदी ने कहा कि अजीत जोगी जी में जरूर कुछ है। कांग्रेस की हर बार पराजय के बाद भी मैडम सोनिया उन्हें छोड़ नहीं सकती हैं।

श्री मोदी ने अपने गरीबी में बिताए बचपन के दिनों को याद किया और विलासिता में हुई कांग्रेस उपाध्यक्ष की परवरिश के कारण वो सोच भी नहीं सकती हैं कि एक चाय विक्रेता के रूप में उन्हें कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इतनी अधिक कठिनाइयों ने ही उनके गरीबों की सेवा और जरूरतमंदों को सशक्त करने के लिए अपने दृढ़ संकल्प को और भी अधिक प्रबलित किया।

लोगों के कल्याण के लिए भाजपा की पहल को रेखांकित करते हुए श्री मोदी ने बताया कि कैसे श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने आदिवासियों के कल्याण के लिए एक अलग मंत्रालय खोलने की पहल की थी। उन्होंने भाजपा सरकार के तहत मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में क्रमशः श्री शिवराज सिंह चौहान और डॉ. रमन सिंह के प्रेरक नेतृत्व में देखे गए सकारात्मक विकास पर भी प्रकाश डाला।

भारतीय जनता पार्टी के एकीकृत और सशक्त बनाने के दृष्टिकोण की बात करते हुए श्री मोदी ने बताया कि कैसे श्री अटल जी की सरकार के तहत छत्तीसगढ़, झारखंड और उत्तराखंड जैसे नए राज्य सौहार्दपूर्ण ढंग से बनाए गए थे, दूसरी तरफ कांग्रेस के विघटनकारी और विनाशकारी दृष्टिकोण को उजागर करते हुए श्री मोदी ने आगे बताया कि तेलंगाना और सीमान्ध्र के निर्माण के समय किस प्रकार से रक्तपात हो रहा है। उन्होंने लोगों से भाजपा को वोट देने का आग्रह किया और भाजपा के दिल्ली की सत्ता में आने के बाद उनकी सभी समस्याओं से मुक्ति दिलाने का आश्वासन दिया। ■

## ओडिशा

## 'गरीबी दूर करने के लिए अथक प्रयास करेंगे'

गत 11 अप्रैल को ओडिशा के बालासोर, क्योंझर और ढेंकनाल में अपनी रैलियों में श्री नरेन्द्र मोदी ने भ्रष्टाचार और लोगों की प्रगति की कीमत पर अपनी जेब भरने की कांग्रेस की अपनी निहित विशेषता को उजागर करते हुए उस पर तीखा हमला किया। श्री मोदी ने अपने लोगों के प्रति ओडिशा सरकार की उदासीनता के बारे में बताया और लोगों से दिल्ली में एक जिम्मेदार और जवाबदेह सरकार सुनिश्चित करने के लिए भाजपा को अपना समर्थन देने की अपील की।

कांग्रेस की असंवेदनशीलता पर हमला करते हुए श्री मोदी ने कहा की गरीबों के प्रति उनकी सहानुभूति केवल किसी गरीब के घर जाकर उसके साथ फोटो खिंचाने तक दिखती है, और इस तरह की रणनीति से उन्हें कभी गरीबों का दर्द समझ में नहीं आ सकता है। उन्होंने कहा कि जब

चुनाव आते हैं तब वे गरीबों का नाम लेने लगते हैं। यह कुछ नहीं केवल चुनाव जीतने का एक रास्ता है। जैसे हम किसी पर्यटक स्थल तक जाते हैं वैसे ही ये लोग पर्यटन के लिए गरीबों के घरों में जाते हैं और साथ में कैमरामैनों को भी ले जाते हैं। उन्होंने वंचितों को सशक्त बनाने पर भाजपा के ध्यान की पुष्टि की, और इसे सिद्ध करने के लिए 'दरिद्र नारायण' की सेवा में पार्टी के ट्रैक रिकॉर्ड को सामने रखा।

उन्होंने ओडिशा की विकास क्षमता के दोहन में राज्य और केंद्र सरकार की दूरदर्शिता में कमी को उजागर करते हुए, वर्तमान सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार को लोगों के सामने रखा जिसने राष्ट्र को बर्बाद कर दिया है।

श्री मोदी ने लोगों के द्वारा निर्वाचित ओडिशा के मुख्यमंत्री की उदासीनता की निंदा की, और कहा कि कैसे तंग आकर लोगों ने सरकार में परिवर्तन लाने के बारे में सोचा है। उन्होंने लोगों से कमल चुनाव चिह्न पर वोट देकर भाजपा को बहुमत दिलाने के लिए कहा जिससे इस देश का भविष्य उज्ज्वल हो सके। ■

**महाराष्ट्र**

## 'कांग्रेस से मुक्ति पाने का अर्थ देश की प्रगति'

**21** अप्रैल को महाराष्ट्र के कल्याण तथा मुम्बई की विशाल रैलियों को सम्बोधित करते हुए भाजपा के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी श्री नरेन्द्र मोदी ने लोगों से अपील की कि वे कांग्रेस एनसीपी गठबंधन को सत्ता से बाहर कर इनके कुशासन से मुक्ति पाएं क्योंकि इन्हीं पार्टियों की विभाजनकारी राजनीति ने देश को बर्बाद करके रख दिया है और सुशासन का मार्ग केवल एक ही राष्ट्रवादी पार्टी भाजपा है जो पूरे देश को बिना किसी भेदभाव के समृद्धि की दिशा प्रदान कर सकती है।

अपने सम्बोधन में उन्होंने आगे कहा कि राज्य और केन्द्र सरकारों के अहंकार और झूठे वायदों के कारण देश को आज उनकी निष्क्रियता के कारण निर्धनता, महंगाई बेरोजगारी और भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ रहा है। हम उनके कुशासन को और आगे बढ़ने की इजाजत नहीं दे सकते हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए उनके घोषणापत्र की याद दिलाते हुए कहा कि कांग्रेस ने अपने झूठे वायदों के कारण न केवल लोगों को गुमराह किया, बल्कि उनकी महत्वाकांक्षाओं को कुचल डाला। कांग्रेस का अभी तक का रिकॉर्ड है कि वे महंगाई, बेरोजगारी आदि जैसे वास्तविक मुद्दों का जवाब न देते हुए, वे एक ही बात की सेक्युलर होने का सहारा लेते रहते हैं और इसी सेक्युलरवाद के बंकर में घुस कर लोगों को राष्ट्रीय मुद्दों पर जवाब नहीं देते हैं।

उन्होंने कांग्रेस के उपाध्यक्ष की 'सोच' की निंदा करते हुए कहा कि जहां भाजपा के लिए भारत एक 'मातृभूमि' है, वहीं उनके लिए यह एकमात्र 'भूमि' बन कर रह गई है। मुझे पूरा भरोसा है कि कांग्रेस को ऐतिहासिक पराजय का सामना करना पड़ेगा और यह भी संभव है कि संभवत: किसी भी राज्य में 'दो अंकों' में भी सीटें न मिल सकें।

इस अवसर पर उन्होंने शिवाजी महाराज, डा. बाबा साहब अम्बेडकर और स्वर्गीय श्री बाला साहब को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर शिवसेना के अध्यक्ष श्री उद्धव ठाकरे ने अपने सम्बोधन में वर्तमान सरकार के आकंठ भ्रष्टाचार में डूबी की याद दिलाते हुए कहा कि इससे राष्ट्र की विकास संभावनाएं समाप्त हो गई हैं।

वरिष्ठ भाजपा नेता श्री गोपीनाथ मुण्डे और आरपीआई नेता श्री रामदास अठावले भी रैली में उपस्थित थे। ■

मध्यप्रदेश

## 'भारत में क्रांति लाने के लिए भाजपा को लाएं'

गत 18 अप्रैल को मध्य प्रदेश में बैतुल और छह गांव माखन में 'भारत विजय रैलियां' का आयोजन हुआ, जिसमें श्री नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस की भ्रष्ट नीतियों से देश को बचाने के लिए एक ही रास्ता है कि भाजपा को वोट देकर केन्द्र में विकासोन्मुखी सरकार बनाई जाए।

श्री मोदी ने मध्य प्रदेश मुख्यमंत्री श्र शिवराज सिंह चौहान की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने श्री चौहान के प्रयास से एक 'बंटाधार' राजनीति से बर्बाद हुए बीमारू राज्य को फिर से सफलतापूर्वक विकास पर ले जाने का श्रेय उन्हें ही जाता है। उन्होंने कहा कि पिछले साठ वर्षों में कांग्रेस की विभाजनकारी और विध्वंसात्मक नीतियों से बर्बाद हुए राष्ट्र को भाजपा के बेहतर सुशासन से लोगों का समर्थन प्राप्त हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस की घमण्डी सरकार आज तक नहीं देखी गई है। हाल में प्रकाशित 'दि एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर' से पता चलता है कि 'मां-बेटे' दोनों ही मिलकर देश के बारे में फैसले करते थे और प्रधानमंत्री उपेक्षित रहते थे।

श्री मोदी ने आश्वासन दिया कि सभी वर्गों के लिए भाजपा विकास और प्रगति पर ध्यान देगी, विशेष रूप से दलित लोगों पर, और कांग्रेस के 60 वर्षों की काली करतूतों पर 60 महीने में ही समाप्त कर देगी। उन्होंने कहा कि मतदान के प्रारम्भिक चरण पहले ही कांग्रेस का सफाया कर चुके हैं और आगे आने वाले चरणों में एक मजबूत और स्थिर सरकार केन्द्र में बन सकेगी। ■

महाराष्ट्र

## 'कांग्रेस की आदत, पहले अपना हित'

गत 12 अप्रैल को महाराष्ट्र में अहमद नगर और पुणे में श्री नरेन्द्र मोदी ने भाजपा-शिवसेना-आरपीआई गठबंधन का समर्थन करने के लिए लोगों से अपील की ताकि देश को और अधिक बर्बादी से बचाया जा सके। उन्होंने कांग्रेस पर लोगों का अपने निजी स्वार्थों के लिए शोषण करने की बात कही और कहा कि कांग्रेस ने केवल 'एक्ट' बनाने पर ही ध्यान दिया, परन्तु किया कुछ नहीं।

'दि एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर' पुस्तक के प्रकाशन में लेखक ने पिछले दशक में देश के पतन के कारण बताए हैं जिसमें साफ-साफ कहा कि अंतिम सत्ता श्रीमती सोनिया के हाथों में थी और यह हर बात हर विषय पर लागू होती थी। लेखक ने कहा कि मैडम सोनिया पहले फाइल स्वीकृत करती थी और तभी प्रधानमंत्री के पास जाती थी। मंत्रालयों का फैसला सोनिया जी करती थी, नियुक्तियां भी वही करती थी। सब कुछ रिमोट कंट्रोल से होता था। इसी से पता चलता है कि पीएमओ में काम कैसे होता था।

अपने निजी लाभों के लिए कांग्रेस की विख्यात संस्थानों की प्रवृत्ति की चर्चा करते हुए श्री मोदी ने आगे कहा कि राष्ट्रीय सलाहकार परिषद और सीएजी जैसी सरकारी संस्थानों

को निजी प्रतिशोध के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

कांग्रेस से नागरिकों की चिंता न होते हुए केवल कुछेक चंद लोगों की चिंता रहती थी जिसके उदाहरण हम श्री सुशील कुमार शिंदे को गृहमंत्री बनाने और भ्रष्टाचार के आरोप होते हुए भी श्री खुर्शीद को विदेश मंत्री बनाए जाने से पता चल जाता है।

श्री मोदी ने नेशनल रूरल एम्पलायमेंट गारण्टी एक्ट या फूड सिक्युरिटी बिल का जिक्र भी किया कि कांग्रेस केवल 'एक्ट' बनाने में विश्वास रखती है, न कि उस पर काम करने पर भी। कांग्रेस को पता है कि उसकी पराजय निश्चित है, इसीलिए ऐसा होता है। अपने भाषण में श्री मोदी ने शिवाजी महाराज को श्रद्धांजलि दी और श्री बालगंगाधर तिलक के 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' को दोहराया।

महाराष्ट्र में भाजपा प्रत्याशियों की संभावनाओं पर चर्चा करते हुए श्री मोदी ने कहा कि महायुति बड़े योग्य प्रत्याशी हैं और लोगों से अपील की कि वे उन्हें विजयी बनाएं ताकि दिल्ली में मजबूत सरकार बन सके। ■

# कथा कठपुतली प्रधानमंत्री की

वेदप्रताप वैदिक

मुझे याद नहीं पड़ता कि किसी प्रधानमंत्री के पद पर रहते हुए उसके किसी पूर्व सलाहकार ने उसके बारे में कोई किताब लिखी हो। डॉ. संजय बारू ने लिख दी और उसका नाम क्या दिया? एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर! अंग्रेजी के इस शब्द 'एक्सीडेंट' के दो अर्थ हैं। एक तो संयोग और दूसरा दुर्घटना। बारू उन्हें 'संयोगवश प्रधानमंत्री' कहना चाहते हैं, लेकिन वे भारत और कांग्रेस के लिए दुर्घटना सिद्ध हो रहे हैं। संयोगवश प्रधानमंत्री या अचानक प्रधानमंत्री तो कई हुए हैं, जैसे लालबहादुर शास्त्री, मोरारजी देसाई, चरणसिंह, राजीव गांधी, देवेगौड़ा, इंद्रकुमार गुजराल आदि! संयोगवश प्रधानमंत्री तो स्वयं इंदिरा गांधी भी थीं। किसे पता था कि शास्त्रीजी ताशकंद से लौटेंगे ही नहीं और इंदिराजी प्रधानमंत्री बन जाएंगी? और राजीव गांधी! और नरसिंह राव? ये सब संयोगवश प्रधानमंत्री ही थे। सिर्फ नेहरूजी, वीपी सिंह और अटलजी के बारे में देश को पहले से पता था कि वे प्रधानमंत्री बनेंगे। इसीलिए डॉ. मनमोहन सिंह को संयोगवश प्रधानमंत्री कहना या उनका संयोगवश प्रधानमंत्री होना अपने आप में कोई बड़ी बात नहीं है। बस फर्क इतना है कि डॉ. सिंह अंत तक 'संयोगवश' ही बने रहे। वे अन्य 'संयोगवश' प्रधानमंत्रियों की तरह अपनी हैसियत बदलने में असमर्थ रहे। अब लोग उन्हें 'संयोगवश' भी कहने को तैयार नहीं हैं।

जिन 'संयोगवश' प्रधानमंत्रियों के नाम मैंने ऊपर गिनाए हैं, उनमें से इंदिराजी को छोड़कर किसी को भी इतनी लंबी अवधि नहीं मिली, जितनी डॉ. सिंह को मिली है। डॉ. सिंह से ज्यादा पढ़ा-लिखा (डिग्रीधारी) प्रधानमंत्री भी कोई नहीं हुआ। उन्हें राज करने के लिए दस साल मिले लेकिन उनकी तुलना में जिन प्रधानमंत्रियों को 10 माह भी नहीं मिले, उन्होंने भी राजकीय संस्थाओं और प्रधानमंत्री पद का ऐसा अवमूल्यन नहीं होने दिया, जैसा कि डॉ. सिंह ने होने दिया। इसीलिए 'एक्सीडेंट' शब्द का अर्थ यहां दुर्घटना लगाना ही अधिक उपयुक्त होगा।

**मनमोहन सिंह को संयोगवश प्रधानमंत्री कहना या उनका संयोगवश प्रधानमंत्री होना अपने आप में कोई बड़ी बात नहीं है। बस फर्क इतना है कि डॉ. सिंह अंत तक 'संयोगवश' ही बने रहे। वे अन्य 'संयोगवश' प्रधानमंत्रियों की तरह अपनी हैसियत बदलने में असमर्थ रहे। अब लोग उन्हें 'संयोगवश' भी कहने को तैयार नहीं हैं।**

किसी भी लोकतंत्र के लिए इससे बड़ी दुर्घटना क्या होगी कि देश का प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और सूचनामंत्री चुनाव ही न लड़ें। जनता के सामने जाने से डरे। दस साल आप प्रधानमंत्री रह जाएं और एक दिन के लिए भी लोकसभा के सदस्य न बनें। इसका अर्थ क्या है? क्या यह नहीं कि जनता के प्रति आपका कोई उत्तरदायित्व नहीं है। आपका उत्तरदायित्व सिर्फ उसके प्रति है, जिसने आपको कुर्सी पर बिठाया है। जनता के प्रति इतनी निष्ठुरता का भाव दुनिया के लोकतंत्रों में किसी भी प्रधानमंत्री का नहीं रहा है। ब्रिटेन और भारत में कई प्रधानमंत्री ऐसे हुए हैं कि उन्होंने जब शपथ ली, तब वे लार्ड सभा या राज्यसभा के सदस्य रहे। हाउस ऑफ कॉमन्स या लोकसभा के सदस्य नहीं रहे या संसद सदस्य ही नहीं रहे, लेकिन प्रधानमंत्री बनते ही उन्होंने चुनाव लड़ा और जनता के सदन की सदस्यता ग्रहण की। परंतु हमारे डॉ. सिंह ने इतिहास कायम किया। वे बिना चुनाव लड़े ही अपने पद पर डटे रहे। ऐसा कौन कर सकता है? जो आदमी सवा अरब लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, वह 10-15 लाख मतदाताओं की मुहर भी खुद पर नहीं लगवा सका। ऐसा प्रधानमंत्री कठपुतली नहीं सिद्ध होगा तो क्या होगा? यही निष्कर्ष बारू की 301 पृष्ठों की पुस्तक पढ़ने से निकलता है।

डॉ. सिंह जब पहली बार राज्यसभा के सदस्य बने तो उन्होंने अपने आपको असम का मतदाता बताया। जैसे वे अब तक असम के नकली मतदाता बने हुए हैं, वैसे ही वे भारत के प्रधानमंत्री भी बने हुए हैं। बारू ने यह खोज करने की कोशिश नहीं कि वे प्रधानमंत्री कैसे बन गए? क्या कांग्रेस में उस समय योग्य नेताओं की कमी थी? अर्जुनसिंह,

नारायणदत्त तिवारी, प्रणब मुखर्जी, शिवराज पाटील, चिदंबरम आदि कई नेता थे, लेकिन मनमोहन सिंह ने ही कांग्रेस-नेतृत्व को सम्मोहित क्यों किया? संसद के केंद्रीय कक्ष में कांग्रेस संसदीय पार्टी की उस जोशीली बैठक को कौन भूल सकता है, जिसमें किसी एक वक्ता ने भी यदि प्रधानमंत्री पद के लिए डॉ. सिंह का नाम सुझाया हो। यह ठीक है कि सोनिया गांधी ने स्वयं को उस पद के योग्य नहीं पाया लेकिन उन्होंने एक ऐसे राज्यसभा सदस्य का नाम क्यों सुझाया, जो उनसे भी अधिक अयोग्य पाया गया? इसका कारण, जो बारू ने नहीं खोजा, वह यह था कि सोनियाजी को ऐसा व्यक्ति चाहिए था, जो नख-दंत हीन हो। जो उन्हें और उनकी पार्टी को चुनौती न दे सके। इस कसौटी पर अकेले डॉ. सिंह सौ-टंच खरे उतरे हैं। जेएन दीक्षित और संजय बारू जैसे सलाहकार-अफसरों ने उनकी प्रथम अवधि (2004-2009) के दौरान उन्हें असली प्रधानमंत्री बनने के लिए खूब उकसाया और वे परमाणु-सौदे के समय उकसे भी, लेकिन उसके बाद उन्होंने खुद स्वीकार किया कि अब शक्ति के दो केंद्र नहीं हो सकते। इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो वह अध्यादेश है, जो मनमोहन-मंत्रिमंडल ने तैयार किया था और जिसे फाड़कर फेंकने का एलान राहुल गांधी ने खुले आम कर दिया था। ऐसा अपमान तो सोवियत संघ के कठपुतली प्रधानमंत्रियों का भी नहीं होता था।

हम जरा सोचें कि प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठकर बेचारे मनमोहन सिंह ने खून के कितने घूंट पीये होंगे। उन्हें शपथ-विधि के पहले मंत्रियों की सूचियां पकड़ा दी जाती थीं, उनके मंत्रालय बदल दिए जाते थे, प्रधानमंत्री कार्यालय के उच्चाधिकारियों को 10 जनपथ से सीधे निर्देश मिलते थे। ये निर्देश तो पार्टी-अध्यक्ष के नाम से जारी होते थे, लेकिन इन्हें तैयार करनेवाले लोगों का गिरोह ही भारत के प्रधानमंत्री का काम करता रहा है। 10 साल में इतनी लूट-पाट मची, जितनी अंग्रेजों के पूरे शासनकाल में नहीं मची। क्या यह मनमोहन सिंह ने मचवाई होगी? उन्हें पता तो लगता होगा, लेकिन वे चुप रहने के लिए मजबूर थे। क्यों मजबूर थे? हर व्यक्ति की यह मजबूरी उसी समय तय हो जाती है, जब उसकी नियुक्ति होती है। कोई व्यक्ति किसी पद पर कैसे नियुक्त होता है, यही वह रहस्य होता है, जो तय करता है कि वह नाजुक मौकों पर अपने निर्णय कैसे लेता है?

**निर्णय लेता था पार्टी-अध्यक्ष के जी-हुजूरों का गिरोह और सफाई पेश करनी पड़ती थी प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे एक सज्जन, शालीन और कमबोलू नौकरशाह को। सारे प्रहार भी उनको ही सहने पड़ते थे। इसीलिए विपक्ष के नेता ने प्रधानमंत्री को शिखंडी तक कह डाला। घुट-घुटकर मरने की सबसे मार्मिक राजनीतिक कथा के महानायक हैं, डॉ. मनमोहन सिंह! यदि वे स्वयं अपनी आत्म-कथा लिखें और सब बातें सच्ची-सच्ची लिखें तो पहली बार हमें यह पता चलेगा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के दो सबसे शक्तिशाली पदों को पर्दे के पीछे से कई छुटभैया लोग कैसे चलाते रहे हैं?**

निर्णय लेता था पार्टी-अध्यक्ष के जी-हुजूरों का गिरोह और सफाई पेश करनी पड़ती थी प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे एक सज्जन, शालीन और कमबोलू नौकरशाह को। सारे प्रहार भी उनको ही सहने पड़ते थे। इसीलिए विपक्ष के नेता ने प्रधानमंत्री को शिखंडी तक कह डाला। घुट-घुटकर मरने की सबसे मार्मिक राजनीतिक कथा के महानायक हैं, डॉ. मनमोहन सिंह! यदि वे स्वयं अपनी आत्म-कथा लिखें और सब बातें सच्ची-सच्ची लिखें तो पहली बार हमें यह पता चलेगा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के दो सबसे शक्तिशाली पदों को पर्दे के पीछे से कई छुटभैया लोग कैसे चलाते रहे हैं? यह मामला कुछ व्यक्तियों के मान-अपमान का नहीं है बल्कि पदों की महत्ता के नष्ट होने का है। प्रधानमंत्री के पद पर बैठकर भी मनमोहन सिंह अपने भ्रष्ट मंत्रियों के कान नहीं खींच सके।

अब संतोष का विषय यही है कि वे इस पद से नहीं, राजनीति से ही हाथ धो रहे हैं, जिसने उनकी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को पैंदे में बिठा दिया है। वे प्रधानमंत्री बनने की बजाय प्रोफेसर या नौकरशाह बने रहते तो क्या कहीं अच्छा नहीं होता? ■

*(साभार- दैनिक भास्कर)*

# देश को जरूरत है नई आर्थिक सोच की

✍ तवलीन सिंह

आज अगर हम नरेंद्र मोदी की आर्थिक सोच के बदले चर्चा कर रहे हैं उनकी उस टोपी के पहनने, न पहनने की, तो इसमें सबसे ज्यादा दोष हम पत्रकारों का है। उनके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों ने भी उस टोपी को मुद्दा बनाकर खूब उछाला है, लेकिन जब भी उछाली गई है वह टोपी, हम पत्रकार फौरन पहुंच गए हैं वहां उसको सुर्खियों में रखने के लिए। यह नहीं पूछा हमने कभी कि अगर मोदी ने पहन ली होती वह टोपी, जो उस मौलाना ने उनको देने की कोशिश की थी, तो क्या मुस्लिमों की नजर में मोदी सेक्यूलर बन जाते? क्या टोपी न पहनने से यह साबित हो गया है कि मोदी के दिल में मुसलमानों के लिए नफरत है? नहीं, पर टीवी पर पिछले दिनों आपने देखा होगा किस तरह मोदी का जिक्र आते ही घूम-फिरकर बात उस टोपी तक पहुंचती रही है। इतनी चर्चा सुनने को मिली है उस टोपी की कि मोदी अंदर ही अंदर पछता रहे होंगे कि टोपी पहनने से उन्होंने मना क्यों किया था।

ऐसा लगने लगा है, जैसे मीडिया में मोदी के दुश्मन (उनके दुश्मन ज्यादा, दोस्त कम हैं) जान-बूझकर फिजूल के मुद्दों को अहमियत दे रहे हैं, ताकि जब भी मोदी का जिक्र आए, उनके आर्थिक विचारों का विश्लेषण न किया जाए। अगर ऐसा विश्लेषण होने लग गया होता अभी तक, तो हमको साफ शब्दों में कहना पड़ता कि मोदी राष्ट्रीय स्तर पर पहले राजनेता हैं जवाहरलाल नेहरू के बाद, जो एक नई आर्थिक सोच लेकर आए हैं। यह सोच उस समाजवादी आर्थिक सोच के विपरीत है, जो हमको पंडित नेहरू दे गए थे, और जिसके तहत हमने अर्थव्यवस्था को तकरीबन पूरी तरह छोड़ रखा है राजनेताओं और सरकारी अफसरों के हाथ में।

**बेरोजगारी इस देश की सबसे बड़ी समस्या है। और अगर आज नौजवान मोदी के साथ बांध चुके हैं सारी उम्मीदें, तो इसलिए कि वे समझ गए हैं कि मोदी भारत को एक संपन्न देश में तब्दील करने का सपना देख रहे हैं। संपन्नता के सपनों को साकार करने के लिए नई आर्थिक सोच की जरूरत है।**

आज अगर भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाजें उठ रही हैं, तो इसलिए कि जब सरकारी अधिकारियों और राजनीतिज्ञों के हाथों में तमाम आर्थिक फैसले लेने के पूरे अधिकार दिए जाते हैं, तब भ्रष्टाचार का फैलना स्वाभाविक हो जाता है। आज हाल यह है कि छोटे से छोटा सरकारी अफसर लटकाकर रख सकता है देश के हर नागरिक को। गरीब और मध्यवर्गीय लोग इससे उतने ही परेशान हैं, जितने उद्योगपति। फर्क इतना है कि धनवान रिश्वत देकर अपना काम करवा सकते हैं, और गरीब दबकर रह जाते हैं। इन बातों को ध्यान में रखकर इस चुनाव में मोदी के सबसे अहम आर्थिक नारे को देखना चाहिए। यह नारा है-अधिक से अधिक सुशासन, कम से कम प्रशासन।

नेहरू-गांधी परिवार के हर सदस्य से आपने सुन लिया होगा कि मोदी ने गुजरात में उद्योगपतियों की मदद की है। राहुल गांधी अपने हर दूसरे भाषण में कहते हैं कि मोदी गरीबों की परवाह न कर परवाह करते हैं सिर्फ बड़े उद्योगपतियों की। इस इल्जाम के पीछे असलियत यह है कि मोदी बहुत पहले समझ चुके थे कि रोजगार के नए अवसर पैदा करने की क्षमता सरकारी क्षेत्र में कम है और निजी क्षेत्र में ज्यादा।

पिछले दस वर्षों में अगर बेरोजगारी बढ़ी है इस देश में, तो इसलिए कि निजी उद्योग क्षेत्र पर इतनी पाबंदियां लगाई हैं यूपीए सरकार ने कि निवेशकों ने निवेश करना बंद कर दिया था भारत में। निवेशक अगर निवेश नहीं करेंगे, तो कहां से आएंगी वे नौकरियां, जिनकी जरूरत है इस देश के नौजवानों को? आज युवा मैकडोनाल्ड में, नए सिनेमाघरों और रेस्टोरेंट्स में काम करते दिखते हैं। जो ज्यादा शिक्षित हैं, उनको मिलती हैं इतनी बेहतर नौकरियां निजी उद्योग में, जो न होतीं, तो बेरोजगारी की समस्या और भी गंभीर हो गई होती अब तक।

बेरोजगारी इस देश की सबसे बड़ी समस्या है। और अगर आज नौजवान मोदी के साथ बांध चुके हैं सारी उम्मीदें, तो इसलिए कि वे समझ गए हैं कि मोदी भारत को एक संपन्न देश में तब्दील करने का सपना देख रहे हैं। संपन्नता के सपनों को साकार करने के लिए नई आर्थिक सोच की जरूरत है। ■

*(साभार- अमर उजाला)*

# टीम इंडिया के कैप्टन हैं नरेन्द्र मोदी

✍ कंचन गुप्ता

भारत की अर्थव्यवस्था की दयनीय स्थिति तथा इस बढ़ते भय को दूर करने के लिए कुछ किया जाना आवश्यक है कि यदि अगले कुछ महीनों में गिरावट और पतन रोकने के लिए कुछ नहीं किया गया तो हम ऐसे संकट की ओर बढ़ेंगे जो 1990 के प्रारम्भ में आये संकट से अधिक गंभीर होगा। यह स्वाभाविक है कि हाल के दिनों में यह चिन्ता भाजपा के प्रधानमंत्री उम्मीदवार के आर्थिक एजेंडे में प्रमुख स्थान पर रही है। पिछले सप्ताह मोदी ने खबरिया चैनलों को दिये अनेक साक्षात्कारों में पार्टी के घोषणापत्र में उल्लिखित विचारों का विस्तार करते हुए मतदाताओं को आश्वस्त किया है कि यदि भाजपा सत्ता में वापस आ जाती है तो अर्थव्यवस्था सही हाथों में होगी। वास्तव में अब मोदी का समर्थन असाधारण लोकप्रियता की लहर पर सवार होकर आगे बढ़ रहा है और वह इस विश्वास से पैदा हुआ है कि कांग्रेस नीत संप्रग सरकार द्वारा लगभग पूरी तरह तोड़ दी गयी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को वे ठीक कर सकते हैं। जब मोदी विनिर्माण क्षेत्र को पुनर्जीवित करने, व्यापक ढांचागत परियोजनायें शुरू करने तथा खाद्य पदार्थों के दामों पर लगाम लगान की बात करते हैं तो वे युवा और परिपक्व मतदाताओं से फौरन संपर्क स्थापित कर लेते हैं। इससे उम्मीदें पैदा होती हैं कि नौकरियां पैदा होंगी तथा परिवार की थाली में उचित कीमत पर भोजन उपलब्ध होगा।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि नये प्रधानमंत्री और उनकी टीम के सामने आने वाली सबसे बड़ी चुनौती अर्थव्यवस्था को वापस पटरी पर लाना है और यह काम किसी प्रकार आसान नहीं है। जब तक वर्तमान समय और 16 मई के बीच कुछ नाटकीय नहीं हो जाता है तब तक तय है कि नरेन्द्र मोदी नये प्रधानमंत्री होंगे। आधी आस्तीन का कुर्ता पहनने के कारण कहावत की तरह कहा जा सकता है कि वे फौरन अपनी आस्तीनें चढ़ा कर अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने तथा इसका स्वास्थ्य वापस लाने का काम करेंगे। यह देखना होगा कि वे अपने पहले कुछ महीनों में यह जादू कर सकेंगे या नहीं, लेकिन गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में उनके शानदार रिकार्ड को देखते हुए कम से कम वर्ष के अन्त तक इसके शुरुआती लक्षण मिल जायेंगे। संस्थाओं की विश्वसनीयता समाप्त होने के बाद उनको स्पष्ट नीतियों के आधार पर बहाल करने का अर्थ होगा कि मोदी अभियान का पहला वादा ''अच्छे दिन आने वाले हैं' पूरा होगा। नि:संदेह संदेहवादी अनुमान लगायेंगे कि वे विफल होंगे, पर ऐसी बातों से भ्रमित होने का कोई अर्थ नहीं है।

अर्थव्यवस्था के अलावा मोदी अपनी सार्वजनिक बैठकों में और साक्षात्कारों में जो अन्य चिन्तायें प्रकट करते हैं उन पर भी समान रूप से ध्यान दिया जाना चाहिये। इसका संबंध केन्द्र-राज्य संबंधों से है। संप्रग शासन के दौरान खोये दशक में केन्द्र सरकार और राज्यों के बीच, खासकर भाजपा व उसके सहयोगियों द्वारा नियंत्रित राज्यों के बीच इस सीमा तक खराब हो गये हैं कि नयी दिल्ली और राज्यों की राजधानियों के बीच बहुत कम या कोई विश्वास नहीं बचा है। एक प्रेरणाविहीन तथा कमजोर प्रधानमंत्री ने इस स्थिति को और खराब होने दिया तथा वे राज्यों के सरोकारों को संबोधित करने में विफल रहे तथा उनकी उम्मीदें पूरी नहीं कर सके। मनमोहन सिंह स्वयं को राष्ट्रीय नेता के रूप में पेश कर सकते थे, पर उन्होंने स्वयं को 10 जनपथ का दरबारी बनाना पसंद किया तथा भारत के प्रधानमंत्री के रूप में अपनी संवैधानिक जिम्मेदारियां पूरी करने के बजाय सोनिया गांधी के इशारे पर काम करते रहे।

**मनमोहन सिंह स्वयं को राष्ट्रीय नेता के रूप में पेश कर सकते थे, पर उन्होंने स्वयं को 10 जनपथ का दरबारी बनाना पसंद किया तथा भारत के प्रधानमंत्री के रूप में अपनी संवैधानिक जिम्मेदारियां पूरी करने के बजाय सोनिया गांधी के इशारे पर काम करते रहे।**

यदि सच कहा जाये तो उन्होंने अपने कार्यकाल की शुरुआत बिना सम्मान और आत्मसम्मान के शुरू की और वे कभी एक बाबू के स्तर से ऊपर नहीं उठ सके। उन्होंने शानदार तरीके से कहा कि 'खांचे के बाहर सोचने की

आवश्यकता' है पर उन्होंने अपने राजनीतिक आका को खुश करने के अलाड़ा और कुछ नहीं सोचा। मुख्यमंत्रियों को नियमित रूप से दिल्ली में बैठकों के लिए बुलाया जाता रहा, पर नीति या पहलकदमियों के रूप में इन बैठकों से कुछ नहीं निकला। मुख्यमंत्रियों से वही घिसी-पिटी बातें की गयीं कि उन्होंने मनमोहन सिंह के आमंत्रण स्वीकार करना बंद कर दिया और इसमें लगभग सभी मुख्यमंत्री शामिल थे।

10 वर्ष के बाद परस्पर विश्वास और सम्मान के आधार पर मुख्यमंत्रियों से संबंध बनाने के मामले में मनमोहन सिंह पूरी तरह विफल रहे। इस पर यीट्स की एक उल्लेखनीय पंक्ति याद आती है कि 'चीजें बिखरने लगीं और केन्द्र उनको रोक नहीं सका।' अरविन्द केजरीवाल और आम आदमी पार्टी का उभार एक प्रतीक है कि इस देश में 'और ज्यादा अराजकता फैलेगी।'

केन्द्र द्वारा चीजों को अलग-अलग बिखरने से रोकना होगा और नरेन्द्र मोदी को तेजी से काम करते हुए केन्द्र तथा राज्य सरकारों के बीच विश्वास बहाल करने के प्रयास करने चाहिये। खासतौर से उनको प्रधानमंत्री तथा मुख्यमंत्रियों के बीच संबंध बहाल करने होंगे। मोदी के पास केन्द्र-राज्य संबंधों को सुधारने ठीक करने तथा पुनर्गठित करने की योजनायें हैं। इसकी व्यापक रूपरेखा उनके बयानों और पार्टी घोषणापत्र में पायी जाती है तथा उन्होंने यह सुनिश्चित किया है कि उनकी सोच के अनुसार हों। उन्होंने प्रधानमंत्री तथा केन्द्र सरकार को देश के एकमात्र भाग्यविधाता की अवधारणा समझने का खंडन किया है तथा जोर दिया है कि राष्ट्रनिर्माण की अभिव्यक्ति क्षेत्रीय भावनाओं में भी होनी चाहिये।

**मोदी एक औपचारिक संस्था या मंच नहीं चाहते, बल्कि एकसाथ व संतुलन के साथ काम करने की भावना चाहते हैं और इस बात को दिमाग में रखना चाहते हैं कि देश का सर्वोत्तम हित तथा राज्यों का हित एकसाथ रखा जाना चाहिये।**

संरक्षक और क्लाइंट जैसे संबंध जो हमने अब तक देखे हैं, उनको उन्होंने भी खारिज कर दिया है। लंबे समय से मुख्यमंत्री के रूप में काम करते हुए वे जानते हैं कि केन्द्र सरकार के साथ काम करने का क्या अर्थ होता है और खासकर ऐसी सरकार से जो सोवियत मॉडल की बिगड़ी केन्द्रीयता के आधार पर काम करती हो। जब वे संघवाद की बात करते हैं तो वे अपने तथा दूसरों के चारों ओर विमर्श पैदा करते हैं। कमजोर केन्द्र को देखते हुए राज्य के एजेंडे आगे करने का उनका अनुभव है। 'टीम इंडिया' में प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री हैं, यह विभिन्न लोगों की अलग-अलग राजनीतिक विचारधाराओं को देखते हुए काल्पनिक लग सकता है पर असंभव नहीं है।

मोदी एक औपचारिक संस्था या मंच नहीं चाहते, बल्कि एकसाथ व संतुलन के साथ काम करने की भावना चाहते हैं और इस बात को दिमाग में रखना चाहते हैं कि देश का सर्वोत्तम हित तथा राज्यों का हित एकसाथ रखा जाना चाहिये। राष्ट्रीय महत्वाकांक्षायें निश्चित रूप से क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं का कुल योग है, लेकिन कोई भी उम्मीद राष्ट्रीय उम्मीद की तब तक प्रतिनिधि नहीं हो सकती जब तक यह भारतीय संघ में शामिल अन्य राज्यों का प्रतिनिधित्व न करती हो। मोदी पहले मुख्यमंत्रियों में विश्वास की बात करते हैं जिनको अपने राज्य के लिए सर्वोत्तम तय करने का अधिकार होना चाहिये। उनको इस बात की स्वतंत्रता होनी चाहिये कि वे केन्द्र का पैसा कैसे खर्च करें तथा उनको राज्यों के हितों को प्रभावित करने वाली विदेश नीति बनाने में कैसे शामिल करें।

उनका इस बात के लिए मजाक उड़ाना आसान होगा कि उन्होंने ऐसे क्षेत्र में प्रवेश किया है जहां प्रवेश की किसी ने हिम्मत नहीं की है लेकिन इसी के साथ ही यह विचार करने का समय आ गया है कि 'भारत के विचार' का क्या अर्थ है। यह विचार केवल सांस्कृतिक और सामाजिक बहुलता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें राजनीतिक बहुलता तथा क्षेत्रीय भावनाओं के प्रति सहनशीलता भी शामिल होनी चाहिये।

एक प्रकार से केन्द्र-राज्य संबंधों में सुधार मोदी का लिटमस टेस्ट होगा। यदि वे सर्वग्रासी केन्द्रीयता को दूर करने में सफल होते हैं जो केन्द्र से वाम वाले लोगों को बहुत प्रिय है और यह अतीत की बात हो गयी है तो वे सच्ची भावना से संघवाद को लागू करने में सफल होंगे। इसकी इच्छा केन्द्र से दक्षिण वाले लोग भी करेंगे। ऐसी स्थिति में वे भारत को सोवियत युग के बोझ से मुक्त करने में सफल होंगे।

नयी दिल्ली की सरकार भारत के नियंत्रण में होनी चाहिये, पर लूटियनों की दिल्ली को भारतीय राजनीति में सर्वोच्च स्थान दिये जाने की आवश्यकता नहीं है। बहुत लंबे समय से चीजों को जिस प्रकार समतल करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है, उसे होने दें। इसके परिणाम सबके लिये अच्छे होंगे। ■ *(साभार- पायनियर)*

*(लेखक भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं)*

# मोदी ने जगाया आत्मविश्वास

✍ राजनाथ सिंह सूर्य

भारतीय राजनीति में छिछोरेपन का जैसा वीभत्स प्रदर्शन वर्तमान लोकसभा चुनाव में देखने को मिला है, उसकी शायद ही किसी ने कल्पना की होगी। एक ओर जहां राजनीति करने वाले अपनी कुत्सित अभिव्यक्तियों के कारण विश्वसनीयता खोते जा रहे हैं, वहीं पहली बार मतदाताओं की ''सभी धान बाइस पसेरी'' अर्थात् सभी एक समान हैं, सभी लुटेरे हैं, प्रतिक्रिया-जो आम थी-इस बार यदा-कदा ही सुनने को मिल रही है। मतदाताओं में लोकतंत्र के प्रति विश्वास और लगाव में अभूतपूर्व आस्था केवल मतदान प्रतिशत में वृद्धि के रूप में ही नहीं प्रगट हुई है, बल्कि उनमें उत्तम और सशक्त भारत निर्माण की आस्था भी प्रस्फुटित हुई है। पिछले एक दशक में सभी क्षेत्रों में निराशा ने आत्महीनता की भावना को बढ़ावा दिया। यह अनुभव मुखरित हो रहा था कि हम कुछ नहीं कर सकते। न महंगाई रुक सकती है न भ्रष्टाचार खत्म हो सकता है और न ही भ्रष्टाचारियों तथा राजनीतिक मुखौटाधारी भ्रष्टाचारियों को दंडित किया जा सकता है।

सत्ता की स्वेच्छाचारिता से मुक्ति का स्वर तक नहीं देखा जा रहा था। इस मानसिकता को तोड़ने में अन्ना हजारे के अभियान ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वप्रेरणा से देश की युवा पीढ़ी ने जो हुंकार लगाई उसने सार्थक परिवर्तन की दिशा प्रशस्त किया। उस प्रशस्त मार्ग पर मार्च आधे में रूक गया। अन्ना की छत्रछाया में महत्वपूर्ण बन गए कुछ व्यक्तियों की राजनीतिक महत्वाकांक्षा के कारण। ऐसे लोगों का जो हुआ सो तो हुआ लेकिन स्वयं अन्ना हजारे मार्ग भटग गए। पिछले छह महीनों में उन्होंने बार-बार करवट बदलकर अपने को महत्वहीन बना दिया। लेकिन देश का आत्मविश्वास कायम रहा, युवा पीढ़ी निराश नहीं हुई, वह बहकी भी नहीं क्योंकि राजनीति करने वालों में एक ऐसा व्यक्ति प्रगट हुआ, जो अपने मार्ग से कभी भटका नहीं। चौतरफ हमलों के बीच अडिग रहने वाले इस व्यक्ति नरेंद्र मोदी ने अपने कटु आलोचकों को भी अपने आकलन की समीक्षा करने के लिए बाध्य कर दिया।

अवाम में हितकारी परिवर्तन की पैठ बढ़ी और पिछले कई दशकों से अपने को हीन समझने के लिए प्रोत्साहित करने वाले उपायों की बाढ़ में डूबते जा रहे समाज को आस्था का सहारा मिला। इसलिए पहला चुनाव माना जा सकता है जिसमें सभी लुटेरे हैं, कोई अवाम का हित नहीं सोचता जो आयेगा, वही लुटेगा की अभिव्यक्ति का बोलबाला नहीं रहा। भले ही राजनीति करने वाले अपने छिछोरेपन की नग्नता को परवान चढ़ाने में क्यों न लगे हों।

ऐसा क्यों हुआ? शायद इसलिए कि उसके सामने एक ऐसा व्यक्तित्व प्रगट हुआ जिसकी कथनी और करनी में लोगों को अंतर नहीं दिखाई पड़ा। जो आत्मविश्वास से भरा, कृत्यों से उभरा और वाणी के ओज से अपना पक्ष रखने में औरों के मुकाबले अधिक सफल साबित हुआ। नरेन्द्र मोदी ने लोगों की आस्था को तोड़ने वाली अभिव्यक्ति को तिलांजलि देकर भारत की क्षमता का संज्ञान बढ़ाने को अपने अभियान का मुद्दा बनाया। उन्होंने यह रोना कभी नहीं रोया कि ''आधा गिलास खाली है'' उन्होंने आधा गिलास ''भरा है'' को महत्व दिया। हीन भाव से ग्रस्त करने के बजाय स्वाभिमान को जागृत करने का अभियान चलाया। जहां उन्हें अनेकानेक गालियों का सहारा लेकर उपमानों से संबोधन की बौछार करना

**नरेन्द्र मोदी ने लोगों की आस्था को तोड़ने वाली अभिव्यक्ति को तिलांजलि देकर भारत की क्षमता का संज्ञान बढ़ाने को अपने अभियान का मुद्दा बनाया। उन्होंने यह रोना कभी नहीं रोया कि ''आधा गिलास खाली है'' उन्होंने आधा गिलास ''भरा है'' को महत्व दिया। हीन भाव से ग्रस्त करने के बजाय स्वाभिमान को जागृत करने का अभियान चलाया। जहां उन्हें अनेकानेक गालियों का सहारा लेकर उपमानों से संबोधन की बौछार करना राजनीतिक कर्म बनता गया वहीं मोदी का आत्मविश्वास के साथ समाज को खड़ा करने का अभियान अधिक प्रभावी होता गया।**

राजनीतिक कर्म बनता गया वहीं मोदी का आत्मविश्वास के साथ समाज को खड़ा करने का अभियान अधिक प्रभावी होता गया। जिस प्रकार की शब्दावली में पिछले कुछ महीनों में उन्हें संबोधित किया गया, कोई भी व्यक्ति क्रोधित होकर अपना आपा खो देता। अपने प्रतिद्वंद्वी को परास्त करने के लिए उसे क्रोधित करना रणनीति का सफल अस्त्र है। मोदी के साथ इसी अस्त्र के साथ मुकाबला करने का प्रयास किया जा रहा है। यदि व्यक्ति क्रोधित हो जाता है तो वह अपना संतुलन खो देता है। यह स्थिति सिर्फ कांग्रेसियों की ही नहीं, समाजवादी, बहुजन समाजवादी तथा इसी प्रकार के उन लोगों से भी हो रही है जो अपने को सेक्युलर होने का दावा करते हैं। प्रतिद्वंद्वी के प्रति घृणा साम्यवाद का मुख्य हथियार रहा है लेकिन हाशिए पर चले जाने के कारण वे इतना अधिक अप्रासांगिक हो गए हैं कि शायद ही उनके बारे में कोई चर्चा हो रही हो। लेकिन जो अपने को ''सेक्युलर गैंग'' का सदस्य घोषित करते हैं, उनकी घृणास्पद अभिव्यक्तियां बढ़ती जा रही है।

परिणाम क्या हो रहा है? उनके ही हथियार उन्हीं को बींध रहे हैं। नरेन्द्र मोदी के अभियान की सफलता का कारण है, आक्षेपों के अवरोध को नजरंदाज करते हुए अपने विकास और आस्था तथा अस्मिता की घुट्टी को पिलाते जाना। यही उनके प्रति बढ़ती विश्वसनीयता का कारण बनी है। और इसी कारण चुनावी परिणाम के आकलन का सवरूप प्रगट हो रहा है।

इस प्रकार की चुनाव मानसिकता पनपने का सार्थक परिणाम आयेगा इसमें अब शायद ही किसी को संदेह हो। यह आम बाता है कि जब कोई अपनी बात गले नहीं उतार पाता तो वह खीझ जाता है और गाली गलौज पर उतारू हो जाता है। लोग बाग उसकी इस हास्यास्पद स्थिति का परिहास के रूप में संज्ञान लेते हैं। भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान की कोख से जन्मी आम आदमी पार्टी का बदहाली इसका उदाहरण है। जिस तेजी से इस पार्टी का उदय हुआ था, उसमें कई गुना ज्यादा गति से अस्त भी हो गया।

कांग्रेस अपने वंशवाद की राहु को अंधभक्त बनने के कारण प्रधानमंत्री पद की गरिमा को भी खत्म कर देने के जिस बोझ से दबी हुई थी, उस पर प्रधानमंत्री के मीडिया सलाहकार ने एक और बोझ लाद दिया है। यों तो यह बात सभी को पता थी कि मनमोहन सिंह सोनिया गांधी के बंधुआ भर ही हैं, संजय बारू ने उसकी पुष्टि की मुहर लगा दिया है। इस बीच जबकि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा सेवक भाव वाले व्यक्ति को प्रधानमंत्री बनाने के दुष्परिणामों के बारे में लोगों का संज्ञान बढ़ता जा रहा है, नरेंद्र मोदी ने शासन से अधिक व्यवस्था को चर्चा में लाकर अपने ऊपर स्वेच्छाचारिता का अभियोग लगाने वालों को न केवल कड़ा जवाब दिया है बल्कि अन्य राजनीतिक दलों द्वारा शासित राज्यों में उनके प्रधानमंत्री बनने पर व्यवस्था के अनुरूप आचरण का विश्वास जगाया है जो मनमोहन सिंह के एक दशक के शासनकाल में लोप होता गया है।

नरेंद्र मोदी का प्रशासनिक योगदान क्या होगा, यह तो उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद सामने आयेगा, लेकिन उनके व्यक्तित्व ने चुनाव अभियान के दौरान देश में आत्मविश्वास और आशा को जो माहौल बनाया है वह सबसे बड़ा सकारात्मक योगदान है, यही कारण है कि जो भी कुर्सी संभालेगा वही लुटेगा की अभिव्यक्ति इस चुनाव में मुखरित नहीं हुई है। यही कारण है मतदान प्रतिशत में अभूतपूर्व वृद्धि का। नरेंद्र मोदी के भविष्य के योगदान के लिए अनुकूलता और प्रतिकूलता की तो अभी प्रतीक्षा करनी होगी, लेकिन टूट रही आस्था को पुनः प्रतिष्ठित करने के उनके इस योगदान के लिए अवश्य आभार प्रगट करना चाहिए। ■

*(साभार- पायनियर)*

**नरेंद्र मोदी का प्रशासनिक योगदान क्या होगा, यह तो उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद सामने आयेगा, लेकिन उनके व्यक्तित्व ने चुनाव अभियान के दौरान देश में आत्मविश्वास और आशा को जो माहौल बनाया है वह सबसे बड़ा सकारात्मक योगदान है, यही कारण है कि जो भी कुर्सी संभालेगा वही लुटेगा की अभिव्यक्ति इस चुनाव में मुखरित नहीं हुई है। यही कारण है मतदान प्रतिशत में अभूतपूर्व वृद्धि का। नरेंद्र मोदी के भविष्य के योगदान के लिए अनुकूलता और प्रतिकूलता की तो अभी प्रतीक्षा करनी होगी, लेकिन टूट रही आस्था को पुनः प्रतिष्ठित करने के उनके इस योगदान के लिए अवश्य आभार प्रगट करना चाहिए।**

# नक्सलियों का आम आदमी पर हमला दुर्भाग्यपूर्ण : रविशंकर प्रसाद

राज्यसभा में प्रतिपक्ष के उपनेता व सांसद श्री रविशंकर प्रसाद ने 13 अप्रैल, 2014 को प्रेस-वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि कल छत्तीसगढ़ में हुए नक्सली नरसंहार में 17 लोगों की जानें गई, वह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। नक्सलियों के हाल-फिलहाल के हमलों से ये अब स्पष्ट हो चुका है कि सुरक्षाकर्मियों के साथ-साथ आम जनता भी इनके निशाने पर हैं। दरअसल नक्सलियों की चेतावनी के बाद भी लोकसभा चुनाव में जनता की बढ़ती भागीदारी को देखकर वे बौखलाए हुए और गुस्से में हैं तथा आम जन पर हमला कर रहे हैं। लेकिन इस संबंध में दिल्ली में बैठे नक्सलवाद के बौद्धिक पैरवीकारों की आश्चर्यजनक चुप्पी चिंताजनक है और हम इसकी भर्त्सना करते हैं। इन पैरवीकारों में कई ऐसे भी हैं जो योजना आयोग के सदस्य हैं और कई ऐसे भी हैं जो श्रीमती सोनिया गांधी की अध्यक्षता वाले राष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड के सदस्य हैं। लोकसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए चुनाव आयोग से हम यह भी अपील करना चाहेंगे कि अभी जिन नक्सली इलाकों में चुनाव होना शेष है, उस क्षेत्र में सुरक्षा की विशेष रणनीति बनाए।

**प्रधानमंत्री पद की गरिमा और विश्वसनीयता के साथ समझौता**

श्री प्रसाद ने प्रधानमंत्री के पूर्व सलाहकार श्री संजय बारू की पुस्तक 'द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर' पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जो बातें जोर-शोर से उभरकर बाहर आ रही हैं, संयोगवश कुछ दिन पूर्व भाजपा द्वारा जारी आरोप पत्र में उन्हीं तथ्यों को जगह दी गई तो कांग्रेस ने काफी हंगामा खड़ा किया। लेकिन श्री बारू, जिसे प्रधानमंत्री ने स्वयं अपना मीडिया सलाहकार नियुक्त किया था, की पुस्तक से सबकुछ उजागर हो गया है। आरोप पत्र में हमने प्रधानमंत्री पद की गरिमा और विश्वसनीयता के साथ समझौता वाले शीर्षक के तहत लिखा था कि कांग्रेस ने जिस प्रकार की राजनीतिक संरचना की स्थापना की थी, वह स्वाभाविक रूप से त्रुटिपूर्ण थी। प्रधानमंत्री के रूप में डॉ. मनमोहन सिंह ने श्रीमती सोनिया गांधी की अध्यक्षता वाले बोर्ड के सीईओ के रूप में कार्य किया, जहाँ राहुल गांधी श्रीमती सोनिया गाँधी के डिप्टी थे। भारत की राजनीति की यह विचित्र त्रासदी रही है कि डॉ. मनमोहन सिंह अपनी कुर्सी पर बने रहने के लिए हर समझौता करने के लिए तैयार थे।

श्री प्रसाद ने कहा कि इस संबंध में देश के समक्ष तीन बातें प्रमुख हैं। पहला, संयोगवश प्रधानमंत्री जिसका जिक्र संजय बारू ने अपनी पुस्तक में किया है।

दूसरा, प्रधानमंत्री पद के प्रति उदासीन रहने वाले श्री राहुल गांधी और तीसरा, प्रभावी और जवाबदेह प्रधानमंत्री के उम्मीदवार श्री नरेंद्र मोदी। कुछ दिन पूर्व श्री राहुल गांधी का साक्षात्कार आया था जिसे kindergarten स्तर का कहा गया था। लेकिन कल श्री राहुल गांधी का जो साक्षात्कार आया वह नर्सरी स्तर का भी नहीं था। राहुल गांधी ने अपने साक्षात्कार में कहा है कि वे देश के लोगों को अधिकार देना चाहते हैं। लेकिन देश की जनता जानना चाहती कि राहुल जी जब आप अपनी माताजी के साथ मिलकर प्रधानमंत्री को शक्तिहीन बना डाला, उनके सारे अधिकार छीन लिए तो आम जनता को अधिकार कैसे देंगे?

श्री प्रसाद ने कहा कि कल भाजपा ने कांग्रेस से पांच सवाल किए थे लेकिन कांग्रेस उन सवालों पर खामोश है। इन पांच सवालों के साथ-साथ हम एक सवाल और जोड़ना चाहेंगे। जैसा कि श्री बारू ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है कि जब मनरेगा जैसे विषयों को लेकर उपलब्धि की बात आती थी तो वे सदा इस बात के समर्थन में रहे कि क्रेडिट प्रधानमंत्री को मिलनी चाहिए लेकिन कांग्रेस ने कहा नहीं, क्रेडिट सिर्फ राहुल गांधी को मिलनी चाहिए, इस बात का उल्लेख श्री राहुल गांधी ने कल के साक्षात्कार में क्यों नहीं किया?

श्री प्रसाद ने कहा कि राहुल गांधी कहते हैं विनिर्माण को आगे बढ़ाएंगे। राहुल गांधी इस बात का जवाब दें कि जब वर्तमान में विनिर्माण .2 फीसदी पर आ गई है और 25 दिन के बाद आपकी सरकार जाने वाली है तो किस आधार पर कह रहे हैं कि विनिर्माण बढ़ाएंगे। श्री राहुल गांधी उपलब्धि के तौर पर व भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए सूचना के अधिकार एक्ट की बात अक्सर करते हैं। लेकिन यह एक्ट कोयला घोटाला, कॉमनवेल्थ घोटाला और 2जी स्पैक्ट्रम घोटाला होने से पहले ही अस्तित्व में आ चुकी थी, तो फिर किसी कांग्रेसी नेता पर अब तक कार्रवाई क्यों नहीं हुई? ■

# बौखलाहट में कांग्रेस सरासर झूठे और निराधार आरोप लगा रही है : प्रकाश जावडेकर

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री प्रकाश जावडेकर ने 15 अप्रैल, 2014 को प्रेस-वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि गुजरात में उद्योगों के लिए एक रूपए में जमीन देने का राहुल गांधी का आरोप झूठा है और जानबूझकर गुजरात सरकार को बदनाम करने की कोशिश है। यह कांग्रेस की हताशा और बौखलाहट को दर्शाता है। राहुल गांधी को किसी पर अंगुली उठाने से पहले अपना होमवर्क ठीक ढंग से करके आना चाहिए। वास्तविकता यह है कि गुजरात में एक रूपए में जमीन खुद कांग्रेस समर्थित शंकर सिंह वाघेला सरकार ने दी थी न कि भाजपा सरकार ने।

निराधार आरोप लगाने से पहले राहुल गांधी को निम्नलिखित 3 सवालों के जवाब देने चाहिए :

- गुजरात सरकार पर आरोप लगाने से पहले राहुल गांधी यह बताएं कि उनके जीजा रॉबर्ट वाड्रा को किस कीमत पर और कौन से फार्मूला में जमीन दी जा रही हैं ?
- वह यह भी बताएं कि राष्ट्रपति भवन के पास इतनी बड़ी जमीन उनके जीजा जी से संबंधित कंपनी को कैसे दी गई ?
- राहुल गांधी को यह भी बताना चाहिए कि कांग्रेसजनों और जिनका कोई भी उद्योग नहीं उनको कोयले की खदानें और 2जी स्पेक्ट्रम मोबाईल के लाइसेंस कैसे दिए गए?

दूसरों पर आरोप लगाने से पहले कांग्रेस को खुद के गिरेबान में झांककर देखना चाहिए।

रोजगार एवं उत्पादन बढ़ाने के लिए सभी राज्य सरकारें अपनी औद्योगिक नीतियों के तहत रियायती दरों पर उद्योगों को जमीन मुहैया कराती है और ऐसा करना नीतिगत आवश्यकता है। चूंकि इसे पारदर्शी तरीके से अमल में लाया गया है इसलिए कोई भी इस पर आपत्ति नहीं उठा सकता। वर्तमान गुजरात सरकार ने पारदर्शी तरीके से अपनी औद्योगिक नीति कार्यान्वित की है।

श्री जावडेकर ने कहा कि टेलीविजन पर कल श्रीमती सोनिया गांधी की अपील थकी हुई कांग्रेस का विदाई भाषण था। वह लोगों को ताकत देने की बात करती रहीं लेकिन उन्होंने प्रधानमंत्री को उनके अधिकारों से वंचित रखा, जिनका खुलासा हाल ही में प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के दो पूर्व सहयोगियों द्वारा लिखी गई पुस्तकों से होता है। उन्होंने दूसरे लोगों पर विघटनकारी और साम्प्रदायिक होने का आरोप लगाया लेकिन पुराने रिकॉर्ड बताते हैं कि कांग्रेस सबसे बड़ी साम्प्रदायिक और विभाजनकारी पार्टी है।

श्री जावडेकर ने कहा कि कांग्रेस को उन सवालों के जवाब देने चाहिए जो कोयला खदानें देने के सम्बन्ध में पूर्व कोयला सचिव पी. सी. पारेख ने अपनी पुस्तक में उठाए हैं। उनके द्वारा दी गई जानकारी से भाजपा द्वारा लगाए गए उस आरोप की पुष्टि होती है कि किस प्रकार कांग्रेस ने कोयला ब्लॉक आवंटन की प्रक्रिया में हेर-फेर किया और प्रतिस्पर्धात्मक बोली के प्रस्ताव को अस्वीकार किया। यह साबित हो चुका है कि कोयला ब्लॉक आवंटन में पारदर्शिता नहीं बरती गई और कांग्रेस के थोड़े से लोगों तथा अन्य को लाभ पहुंचाने के लिए उचित नीति जान-बूझकर नहीं बरती गई। 50 लाख करोड़ रुपये के 17 अरब टन कोयले के भंडार 140 निजी कंपनियों को बांट दिए गए। भाजपा के सांसदों की शिकायत के आधार पर सीवीसी ने सीबीआई जांच शुरु कराई। सरकार ने जांच को प्रभावित करने का प्रयास किया और घोटाले पर पर्दा डालने की कोशिश की।

श्री जावडेकर ने कहा कि सरकार को निम्नलिखित सम्बद्ध सवालों के जवाब देने चाहिए :

- क्या यह सही नहीं है कि आपसी आदान-प्रदान का प्रबन्ध कर लिया गया था जिसके माध्यम से सरकार के बाहर फैसला लिया गया और प्रधानमंत्री कार्यालय को इसकी जानकारी दे दी गई?
- सभी आवेदनों का तुलनात्मक मूल्यांकन क्यों नहीं किया गया?
- एक विशेष पक्ष को आवंटन करने और दूसरे के आवेदन को खारिज करने के कारणों को रिकॉर्ड क्यों नहीं किया गया?
- प्रधानमंत्री ने प्रतिस्पर्धात्मक बोली के लिए उनके मंत्रियों द्वारा की गई आपत्तियों को खारिज क्यों नहीं किया?
- सम्बद्ध फाइलें कैसे गायब हो गई?
- सरकार ने कोयला मंत्रालय और पीएमओ के उन अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं की, जिन्होंने सीबीआई रिपोर्ट को प्रभावित करने की कोशिश की? ■

# कांग्रेस को अपनी विफलता को लेकर निराशा होने लगी है : निर्मला सीतारमण

भाजपा की राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीमती निर्मला सीतारमण ने 20 अप्रैल, 2014 को प्रेस वक्तव्य जारी कर कहा कि 9 चरणों के चुनावों में से 5 चरणों का मतदान हो चुका है। कांग्रेस को अपनी विफलता को लेकर निराशा होने लगी है। कांग्रेस को लगने लगा है कि इस बार उसे भयानक पराजय का सामना करना पड़ेगा, जिसके कारण उसके चापलूसों को मानो भ्रम हो रहा है।

श्रीमती सीतारमण ने कहा कि गोंडा, उत्तर प्रदेश से कांग्रेस के उम्मीदवार श्री बेनी प्रसाद वर्मा ने भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार श्री नरेन्द्र मोदी पर गैर जिम्मेदाराना, निराधार और पूरी तरह दुर्भावना से प्रेरित आरोप लगाए हैं। जिस दुस्साहस के साथ श्री वर्मा ने कहा है इन घिनौने आरोपों को वे साबित नहीं कर सकते वह और भी चौंकाने वाला है।

उनके आरोप और सहारनपुर, उत्तर प्रदेश से कांग्रेस के उम्मीदवार इमरान मसूद द्वारा दी गई धमकी उसी स्तर की है जो स्तर तत्कालीन केन्द्रीय कानून मंत्री श्री सलमान खुर्शीद का था। उत्तर प्रदेश के चुनाव के दौरान श्री खुर्शीद का गुमराह करने वाला बयान सर्वविदित है। वह निर्वाचन आयोग को चुनौती देने की हद तक चले गए, वह यह भूल गए कि वह कानून मंत्री हैं और इससे कांग्रेसजनों की निर्लज्जता साबित होती है। यहां यह बता देना उपयोगी होगा कि निर्वाचन आयोग इस मामले का निपटारा करने के लिए राष्ट्रपति के पास गया ताकि संवैधानिक संकट पैदा न हो।

इसी तरह केन्द्रीय इस्पात मंत्री जिनसे उम्मीद की जाती है कि उन्हें भी संवैधानिक प्रावधानों की जानकारी होगी, चुनाव के दौरान इस तरह के निराधार, व्यक्तिगत आरोप लगा रहे हैं।

श्रीमती सीतारमण ने कहा कि भाजपा को इसमें एक पैटर्न दिखाई दे रहा है। कांग्रेस पार्टी अपना धैर्य खो चुकी है। हालांकि उसके उपाध्यक्ष सार्वजनिक रुप से भाशा की क्वालिटी को लेकर सिद्धांतवादी बातें कर रहे हैं, योजना के अनुसार, उनकी मां श्रीमती सोनिया गांधी और कांग्रेस के सभी मंत्री देशभर में घूम-घूमकर 'सफेद झूठ' बोल रहे हैं, निराधार आरोप लगा रहे हैं, विचारधाराओं पर सवाल उठा रहे हैं जिसे वह समझते तक नहीं हैं, भाजपा सरकार की विकास संबंधी उपलब्धियों के बारे में सवाल उठा रहे हैं, जिसे उनकी अपनी यूपीए सरकार ने ट्रॉफियों से पुरस्कृत किया है। इससे उनकी हताशा का पता लगता है।

श्रीमती सीतारमण ने कहा कि श्री शशि थरुर 'ब्लीडिंग' नेतृत्व की बात करते हैं लेकिन इस सवाल का जवाब देने में असमर्थ हैं कि उनके सैनिकों के सिर कलम करने के मुद्दे पर उनकी सरकार क्यों कुछ नहीं कर पाई। पाकिस्तान द्वारा भारतीय सैनिकों के खिलाफ की गई हरकत पर कांग्रेस नेतृत्व की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। श्री थरुर उस वक्त कहां थे जब देश इस अपमान का सामना कर रहा था? जब सैनिक सीमा पर खून बहा रहे थे उस वक्त श्री थरुर की ऐसी नाराजगी देखने को नहीं मिली जो उस समय कैबिनेट मंत्री थे।

सहारनपुर में, कांग्रेस उपाध्यक्ष ने श्री मोदी को धमकी देने के बावजूद इमरान मसूद की उम्मीदवारी को बरकरार रखा। उन्होंने सुबह उनके बयान की निंदा की और शाम को श्री मसूद की पत्नी के साथ उनके लिए चुनाव प्रचार करने लगे।

कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी 'जहर की खेती' की बात करती हैं और श्री बेनी प्रसाद वर्मा को इस बात की इजाजत देती हैं कि वे श्री मोदी के खिलाफ घृणित आरोप लगा रहे हैं, और जहर उगल रहे हैं। ■

**कांग्रेस पार्टी अपना धैर्य खो चुकी है। हालांकि उसके उपाध्यक्ष सार्वजनिक रुप से भाशा की क्वालिटी को लेकर सिद्धांतवादी बातें कर रहे हैं, योजना के अनुसार, उनकी मां श्रीमती सोनिया गांधी और कांग्रेस के सभी मंत्री देशभर में घूम-घूमकर 'सफेद झूठ' बोल रहे हैं, निराधार आरोप लगा रहे हैं, विचारधाराओं पर सवाल उठा रहे हैं जिसे वह समझते तक नहीं हैं, भाजपा सरकार की विकास संबंधी उपलब्धियों के बारे में सवाल उठा रहे हैं, जिसे उनकी अपनी यूपीए सरकार ने ट्रॉफियों से पुरस्कृत किया है। इससे उनकी हताशा का पता लगता है।**

# लोकतंत्र के महापर्व में उमड़ रही मतदाताओं की भीड़

# परिवर्तन का संकेत

आम चुनाव-2014 में भारी मतदान हो रहा है। 16 वीं लोकसभा के चुनाव में नवमतदाता और महिलाओं ने जिस उत्साह से मतदान किया है, उससे लोकतंत्र के प्रति जन-विश्वास निरंतर मजबूत होता जा रहा है। मतदान केंद्र पर लंबी कतारें दिख रही हैं। प्रचंड गर्मी में भी लोगों में मताधिकार का इस्तेमाल करने को लेकर उत्साह दिख रहा है। केरल, पश्चिम बंगाल, झारखंड जैसे कुछ प्रांतों में छिटपुट हिंसा की घटनाएं हुईं लेकिन अधिकांश राज्यों में मतदान शांतिपूर्ण संपन्न हो रहे हैं। भारी मतदान पर वरिष्ठ भाजपा नेता व राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली का कहना है, "बड़ी संख्या में लोग मतदान करने के लिए तब आते हैं जब कोई न कोई चीज उन्हें प्रेरित करती है और भारी मतदान श्री नरेंद्र मोदी द्वारा अगली सरकार बनाने में एनडीए की मदद करेगा।"

पहले चरण में 7 अप्रैल, 2014 को मतदान में दो राज्यों के छह संसदीय क्षेत्रों में मतदान हुए। असम में 72.5 और त्रिपुरा में 84 फीसदी से ज्यादा मतदाताओं ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया।

दूसरे चरण में 9 अप्रैल, 2014 को पांच राज्यों की नौ सीटों पर मतदान संपन्न हुए। नगालैंड में 81.47 फीसदी, मणिपुर में 80 फीसदी, मेघालय में 71 फीसदी और अरुणाचल प्रदेश में 55 फीसदी मतदान हुआ।

तीसरे चरण में 10 अप्रैल को 14 राज्यों की 92 लोकसभा सीटों पर मतदान हुए। चंडीगढ़ में सबसे ज्यादा 74 फीसदी लोगों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। केरल में लोकसभा की सभी 20 सीटों के लिए मतदान में 73.4 फीसदी वोट पड़े। पश्चिम उत्तर प्रदेश की 10 लोकसभा सीटों के लिए 65 फीसदी से ज्यादा मतदान हुए। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बस्तर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में 51.5 फीसदी मतदान हुआ। दिल्ली में लोकसभा की सात सीटों के लिए करीब 64 प्रतिशत ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया। बिहार की 40 में से छह सीटों के लिए हुए चुनाव में 55 फीसदी मतदान हुआ। झारखंड की चार सीटों के लिए 58 फीसदी मतदान हुआ। मध्य प्रदेश में नौ सीटों के लिए चुनाव हुआ, जहां 54.13 फीसदी मतदान हुए जबकि हरियाणा की सभी 10 लोकसभा सीटों पर 65 फीसदी मतदान हुआ।

चौथे चरण में 12 अप्रैल को तीन राज्यों की पांच सीटों पर मतदान संपन्न हुआ। पूर्वी त्रिपुरा में सबसे ज्यादा 81.8 फीसदी मतदान हुआ। गोवा की उत्तर और दक्षिण सीटों में कुल 75 फीसद मतदान हुआ। असम की तीन सीटों स्वायत्त जिला, करीमगंज और सिलचर में 75 फीसद मतदान हुआ। सिक्किम की अकेली सीट पर 76 फीसद मतदान हुआ।

पांचवें चरण में 17 अप्रैल को 12 राज्यों की 121 लोकसभा सीटों पर भारी मतदान हुआ। पश्चिम बंगाल में लोकसभा में चुनावों के पहले दौर में उत्तर बंगाल की चार सीटों के लिए 80 फीसद से ज्यादा लोगों ने वोट डाले। मणिपुर आंतरिक संसदीय सीट पर शानदार 74 फीसद मतदान हुआ। बिहार की सात संसदीय सीटों पर 56 फीसद मतदान हुआ। छत्तीसगढ़ की तीन सीटों पर 63.44 फीसद लोगों ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर संसदीय क्षेत्र में 69.08 फीसद मतदान हुआ। कर्नाटक में 68 फीसद लोगों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। मध्यप्रदेश की 10 सीटों पर 54.41 फीसद मतदान हुआ। ओड़िशा में लोकसभा और विधानसभा चुनावों के लिए एक साथ मतदान हुआ। ओड़िशा की 11 लोकसभा सीटों पर मतदान हुआ। वहां मतदान 70 फीसद रहा। राजस्थान की 20 संसदीय सीटों पर 65 फीसद मतदान रहा। उत्तर प्रदेश में 11 लोकसभा सीटों पर 62.52 फीसद मतदान हुआ। झारखंड की 6 सीटों पर 62 फीसद मतदान हुआ।

छठे चरण में 24 अप्रैल को 11 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी की 117 सीटों पर भारी मतदान हुआ। सबसे अधिक मतदान 83 फीसद पुडुचेरी की एकमात्र लोकसभा सीट पर हुआ। पश्चिम बंगाल में लोकसभा चुनावों के दूसरे दौर में भारी गर्मी के बावजूद 82 फीसद वोट पड़े। असम में हिंसा के बीच 77.05 फीसद मतदान हुआ। राजस्थान में 59.2 फीसद मतदान हुआ। उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के मतदान में 12 सीटों पर मतदान के बहिष्कार और झड़प की घटनाओं के बीच औसतन 60 फीसद मतदान हुआ। झारखंड में लोकसभा की चार सीटों के लिए 63.4 फीसद मतदान हुआ। ■